।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्धारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 130 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च– 2019 30/–प्रति

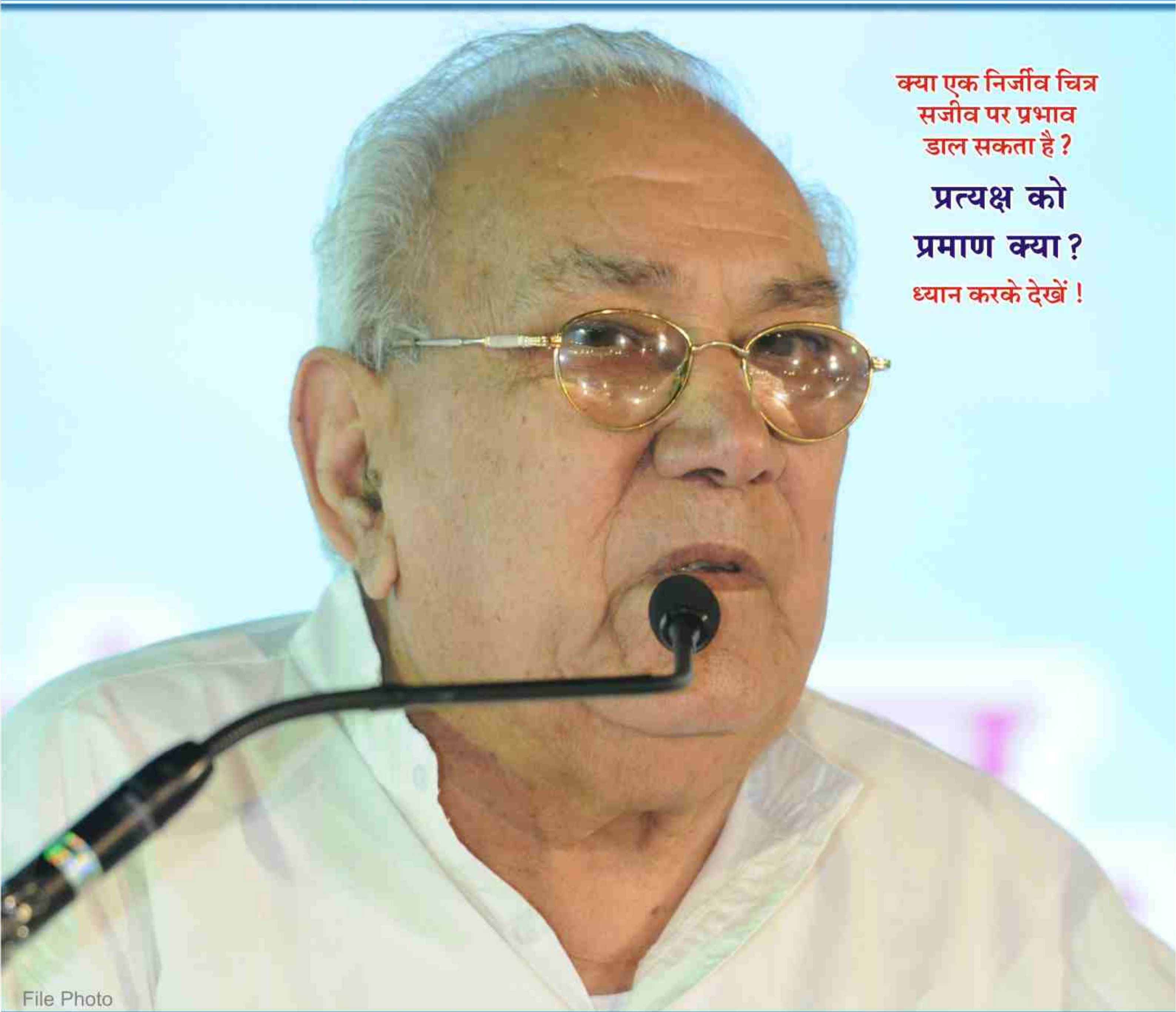

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

ध्यान करके देखें !

File Photo

भारतीय योग दर्शन क्रियात्मक ढंग से उस परमपद को प्राप्त करने की विधि बताता है। हमारे दर्शन के अनुसार ''मनुष्य, ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है'', मनुष्य वास्तव में विराट है। अतः हमारा दर्शन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में है।

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

तस्मै श्री गुरवे नमः

तापत्रयग्नितप्तानां अशान्तप्राणीनां भुवि ।
गुरुरेव परा गंगा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ गुरु गीता-44 ॥

अनुवादः- इस पृथ्वी पर त्रिविध ताप (आधि, व्याधि, उपाधि) रूपी अग्नि से जलने के कारण अशांत हुए प्राणियों के लिए श्री सद्गुरुदेव ही एकमात्र उत्तम गंगा जी हैं। ऐसे श्री सद्गुरुदेव भगवान् को बारम्बार नमस्कार है।

व्याख्याः- इस संसार में सभी व्यक्ति शारीरिक, मानसिक तथा प्रारब्ध के कष्टों से पीड़ित हैं। उनको शांति देने वाला कोई नहीं है। ऐसे व्यक्ति शांति की चाह में साधु-संन्यासियों व संतों के चक्कर लगाते फिरते हैं कि कोई उन्हें शांति का पथ प्रशस्त करें किन्तु शांति का राज केवल आत्मज्ञान ही है, जो केवल सद्गुरुदेव ही बता सकते हैं।

अन्य उपायों से कभी शांति नहीं मिल सकती है। इसलिए केवल सद्गुरुदेव ही एकमात्र उत्तम गंगा जी है, जो तप्तजनों को शीतलता प्रदान करने वाले हैं। ऐसे परम दयालु सद्गुरुदेव को बारंबार नमस्कार है।

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 130 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका मार्च – 2019

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,

होटल लेरिया के पास,

चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :

spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra

Near Hotel Leriya,

Chopasani, JODHPUR (Raj.)

INDIA - 342 003

☎ +91 0291-2753699

Mob. : +91 9784742595

e-mail :

avsk@the-comforter.org

Website :

www.the-comforter.org

अ नु क्र म

मेरे लिए तो गुरु ही सर्वोपरि है............4

सर्वशक्तिमान पर विश्वास (सम्पादकीय)............5

मोक्ष की प्राप्ति............6

Salvation is possible only by worshipping Shri Krishna......7–8

Religious Revolution in the World............9

सद्‌गुरुदेव का प्रवचन............10

हृदय मंथन............11

योग के बारे में............12

योग के आधार............13

योगियों की आत्मकथा............14

अवतार............15

मेरे गुरुदेव............16

जड़ भरत की कथा (कहानी)............17–18

चित्र पृष्ठ............19–22

अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति............23–27

मनुष्य और विकास............28

दिव्य प्रेम............29

अवतार की संभावना और हेतु............30

समता............31

अध्यात्म विज्ञान का प्रत्यक्ष परिणाम............32

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से............33

आध्यात्मिक जीवन और ध्यान............34

चैतन्य मंत्र............35

सिद्धयोग............36

शेष पृष्ठ सम्पादकीय............37

ध्यान विधि............38

www.the-comforter.org

मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है

समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

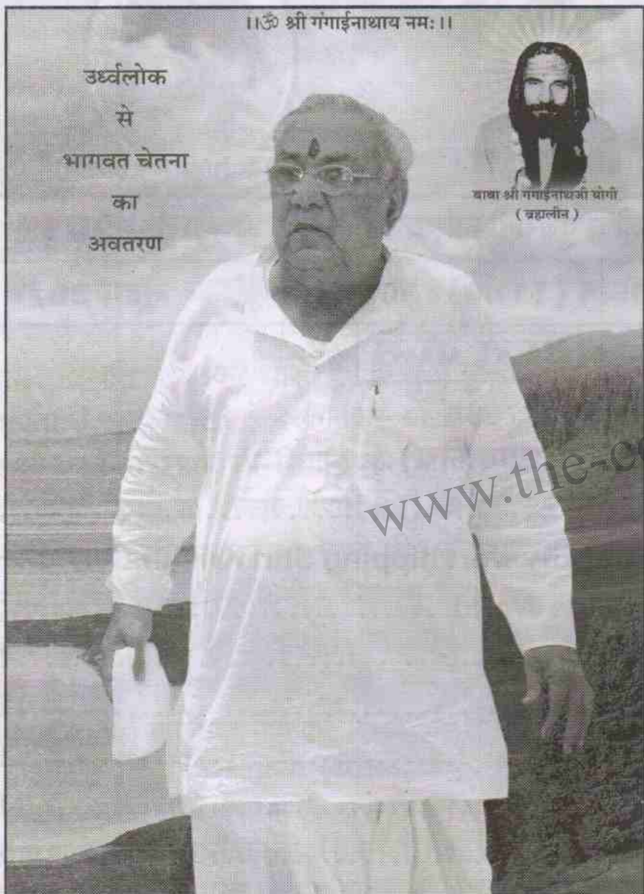

"देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद मेरी 'तस्वीर' तो नहीं मरेगी! वह आपको 'जवाब' देगी।"

–समर्थ सद्‌गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

साधक के लिए सद्‌गुरुदेव के प्रति 'एकनिष्ठता' का भाव ही सर्वोत्तम है।

सम्पादकीय ....

सर्वशक्तिमान पर विश्वास

'विजय', का कारण शक्ति है। किस शक्ति से दुर्बल पक्ष की जीत होती है और प्रबल पक्ष की शक्ति पराजित या विनष्ट?

अगर हम ऐतिहासिक दृष्टांतों की परीक्षा कर देखें तो मालूम होगा कि आध्यात्मिक शक्ति ही बाहुबल को तुच्छ कर, मानव जाति को यह बतलाती है कि यह जगत् भगवान् का राज्य है, अंधः स्थूल प्रकृति का लीलाक्षेत्र नहीं। शुद्ध आत्मा है शक्ति का मूल स्रोत, जो आद्याप्रकृति आकाश में असंख्य सूर्यों को घूमाया करती हैं, अंगुली स्पर्श द्वारा पृथ्वी को हिलाकर मानवसृष्ट अतीत के गौरव-चिह्नों को ध्वंस करती है, वह आद्याप्रकृति है शुद्ध आत्मा के अधीन।

वह प्रकृति असंभव को संभव करती है, मूक को वाचाल, पंगु को गिरि-लांघन की शक्ति देती है-सारा जगत् है, उस शक्ति की सृष्टि। 24 नवम्बर 1926 को उस शक्ति का भौतिक देह में, इस पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। भारत को समय रहते चेतना होना होगा।

वर्तमान परिस्थितियाँ बड़ी विकट चल रही है। चारों ओर निराशा और परेशानियाँ के बादल छाये हैं। वर्तमान में अतिभौतिकता के जितने साधन दिख रहे हैं, वे ईश्वर से बड़े नहीं हैं। इसलिए जो मनुष्य धर्म के पथ पर अग्रसर है, जिनके पास है **आध्यात्मिक सत्य** का **अमोघ अस्त्र-शस्त्र** है, उसको कतई घबराने की, निराश होने की या हतोत्साहित होने की जरूरत नहीं। जिनको है भरोसा-**सर्वशक्तिमान** पर, जिनको केवल मात्र आशा है अपने **परमाराध्य** पर।

हमें इस बात पर निराश नहीं होना कि मेरे पास तो इतना धन नहीं, भौतिकता के अत्याधुनिक हथियार नहीं, फिर मैं कैसे जीत पाऊँगा? किसी कार्य को कैसे पूर्ण कर पाऊँगा?

महर्षि श्री अरविन्द ने यही समझाया है कि जिनको **सर्वशक्तिमान (Almighty, Omnipotent)** पर है पूर्ण भरोसा, जिनको है **धर्म पर विश्वास**, उन्हीं की विजय होती है। इस संबंध में ही विस्तार से समझाया है:-

हमारे पास **बाहुबल** नहीं, युद्ध के उपकरण नहीं, शिक्षा नहीं, राजशक्ति नहीं। किसमें है हमारी आशा? कहाँ है वह बल जिसके भरोसे हम प्रबल शिक्षित यूरोपीय जाति के लिये भी **असाध्य** को सिद्ध करने के प्रयासी हैं? पंडित और विज्ञ कहते हैं कि यह बालकों की उद्दाम दुराशा है, उच्च आदर्श के मद में उन्मत्त अविवेकी लोगों का सारहीन **स्वप्न** है, युद्ध ही स्वाधीनता प्राप्त करने का एकमात्र पथ है, हम युद्ध करने में असमर्थ हैं।

स्वीकार करते हैं कि हम युद्ध करने में असमर्थ हैं, हम भी युद्ध करने का **परामर्श** कतई नहीं देते। किन्तु क्या यह सत्य है कि **बाहुबल** ही है शक्ति का आधार? यदि दो परस्पर विरोधी समान बलशाली शक्तियों का संघर्ष हो तो जिसमें नैतिक और मानसिक बल अधिक होगा,-जिसका ऐक्य, साहस, अध्यवसाय, उत्साह, दृढ़ प्रतिज्ञा, स्वार्थत्याग उत्कृष्ट होगा-जिसमें विद्या, बुद्धि, कुशलता, तीक्ष्ण दृष्टि, **दूरदर्शिता**, साधन **उद्भावन** करने की शक्ति विकसित होगी, निश्चय ही उसकी विजय होगी।

यहाँ तक कि बाहुबल में, संख्या में, उपकरण में जो अपेक्षाकृत हीन होगा, वह भी नैतिक और मानसिक के पन्ने-पन्ने पर लिखा हुआ है। यह कहा तो जा सकता है कि बाहुबल की अपेक्षा नैतिक और मानसिक बल का गुरुत्व अधिक है, पर बाहुबल न होने पर नैतिक और मानसिक बल की रक्षा कौन करेगा? बात ठीक है। परंतु यह भी देखा गया है कि दो चिंतन प्रणालियों, दो संप्रदायों, दो परस्पर-विरोधी सभ्यताओं में संघर्ष होने पर जिस पक्ष की ओर बाहुबल, राजनीतिक, युद्ध का उपकरण इत्यादि साधन पूर्ण मात्रा में थे, उसकी तो हार हो गयी और जिस पक्ष की ओर से, ये सब साधन बिलकुल नहीं थे उसकी जीत हुई।

इस तरह फल की विपरीतता क्यों होती है? **'यतो धर्मस्ततो जयः' (जहाँ धर्म है, वहीं है विजय)** परंतु धर्म के पीछे शक्ति भी होनी चाहिये, अन्यथा अधर्म का अभ्युत्थान और धर्म की ग्लानि स्थायी बनी रह सकती है। बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। **जय का कारण शक्ति है। किस शक्ति से दुर्बल पक्ष की जीत होती है और**

शेष पृष्ठ 37 पर .....

www.the-comforter.org

मोक्ष की प्राप्ति

केवल कृष्ण उपासना से ही सम्भव है।

मनुष्य योनि, प्राणधारियों में सर्वोत्तम योनि है। मनुष्य शरीर, ईश्वर का सर्वोत्तम स्वरूप है। केवल इसी योनि में ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार संभव है और इसके बिना मोक्ष असम्भव है। केवल मोक्ष ही जीवन का आखिरी उद्देश्य है। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि यह मनुष्य शरीर सुखरहित क्षण भंगुर है। केवल ईश्वर प्राप्ति से ही मोक्ष और परमानन्द की प्राप्ति संभव है। इस सम्बन्ध में भगवान् ने गीता के नौवें अध्याय के 32वें और 33वें श्लोक में साफ कहा है :-

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य
ये पि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्ते
पि यान्ति परां गतिम्।। 9:32।।
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या
भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं
प्राप्य भजस्व माम्।। 9:33।।

क्योंकि हे अर्जुन ! स्त्री, वैश्य शुद्रादिक तथा पापयोनि वाले भी जो कोई होवें, वे भी मेरे शरणागत हो कर परमगति को प्राप्त होते हैं, फिर क्या कहना है। पुण्य शील ब्राह्मणजन तथा राजर्षि भक्तजन (परमगति को) प्राप्त होते हैं, इसलिए सुख रहित क्षणभंगुर इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मेरा ही भजन कर। परन्तु हम देख रहे हैं, भगवान् ने गीता में सारी स्थिति स्पष्ट कर दी है फिर भी संसार का मानव भ्रमित हुआ, अविश्वासी नस्तिकों की तरह भटक रहा है। या फिर छोटे-छोटे देवताओं तथा प्रेतों के सामने नतमस्तक हुआ, भयंकर कष्ट भोगते हुए नष्ट होकर अधोगति को प्राप्त हो रहा है। एक तो कलियुग के कारण संसार में पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का साम्राज्य और फिर ऐसी स्थिति में त्रिगुणमयी, योगमाया के चक्कर से निकलना, इस युग में बड़ा कठिन है। केवल भगवान् की अनन्य शरण से ही काम बनना सम्भव है। इस सम्बन्ध में भगवान् ने सातवें अध्याय के 14वें श्लोक में स्पष्ट कहा है :-

दैवी ह्योषा गुणमयी
मम् माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते
मायामेतां तरन्ति ते।। 7:14।।

क्योंकि यह अलौकिक त्रिगुणमयी मेरी योगमाया बड़ी दुस्तर है, जो पुरुष मेरे को ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं। ऐसी स्थिति में इस युग में प्रचलित आराधनाओं से मोक्ष प्राप्त करना असम्भव है। संसार के सभी प्राणी त्रिगुणमयी माया के क्षेत्र की शक्तियों को ही मोक्ष देने वाली सत्ता समझ कर, उनके चक्कर में भ्रमित हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में गीता के आठवें अध्याय के 16वें श्लोक में स्थिति को स्पष्ट करते हुए भगवान् ने कहा हैं :-

आब्रह्मभुवनाल्लो
काः पुनरावर्तिनो अर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय
पुनर्जन्म न विद्यते।। 16।।

हे अर्जुन ! ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं।, परन्तु हे कुन्ती पुत्र ! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता है। इस पर भी काल के गुण धर्म के कारण लोगों की मति ऐसी भ्रमित हो रही है कि जन्म मरण के चक्कर में डालने वाली शक्तियों से ही लोग मोक्ष की उम्मीद कर रहे हैं। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के अठारहवें अध्याय के 66वें श्लोक में साफ कहा है :-

सर्वधर्मान्परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।
18:66।।

सब धर्मों को त्यागकर केवल एक मुझ परमात्मा की शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर। इसके बावजूद संसार के प्राणी उस सनातन सत्ता को छोड़ माया की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। संसार में तामसिक वृत्तियों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो चुका है।

भारत में तो यह अन्धकार सर्वाधिक ठोस बनकर जम चुका है। जब आध्यात्मिक गुरु, भौतिक विज्ञान की सच्चाई के विरुद्ध प्रचार करते हैं तो मुझे भारी दुःख होता है। ऐसे ढोंगी लोग अपना जीवन तो बिगाड़ ही रहे हैं, भोलेभाले लोगों को धर्म की आड़ में भारी संकट में डालकर, भारी पाप के भागी बन रहे हैं।

ऐसी स्थिति में अगर भारत के हिन्दू कितना ही प्रयास करें, संसार के लोगों को प्रभावित नहीं कर सकेंगे। भारत में इस समय न धर्म बचा है, न सच्चाई और ईमानदारी बची है और न ही राष्ट्रीयता। जब तक हम इस कटु सत्य को स्वीकार करके, बीमारी का इलाज नहीं खोजेंगे, हमारा कल्याण असम्भव है। तिलक-छापे करने, कपड़े रंगने, तन रंगने से काम चलने वाला नहीं है। यह रोग तो मन रंगने से ही ठीक होगा। क्योंकि यह मन ही सारा प्रपंच हम से करवा रहा हैं। मीरां बाई ने ठीक ही कहा है "अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया।"

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
3.4.1988

www.the-comforter.org

Salvation is possible only by worshipping Shri Krishna

Human species is the best among all kinds of living beings. Human body is the best form of GOD. Direct experience of GOD and Self realization is possible only in human body and liberation is impossible without it. Liberation is the ultimate aim of human life. Bhagawan Shri Krishna has clearly said that this human body is transitory and devoid of any happiness. It is possible to get liberation and divine bliss only by realizing God. In this context Bhagawan Shri Krishna has clearly mentioned in the 32nd and 33rd 'Shlok' (verse) of the ninth chapter in Geeta: -

माम् हि पार्थ व्यपाश्रित्य
ये पिस्यु: पापयोनय:।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्ते पि
यान्ति परांगतिम्।। 9:32।।

क्योंकि हे अर्जुन ! स्त्री, वैश्य और शुद्रादिक तथा पापयोनि वाले भी जो कोई होवें, वे भी मेरे शरण होकर तो परम गति को ही प्राप्त होते हैं।

किं पुनर्ब्राह्मणा: पुण्या
भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखां लोकमिमं
प्राप्य भजस्व माम्।। 9:33।।

फिर क्या कहना है कि पुण्यशील ब्राह्मणजन तथा राजर्षि भक्तजन परमगति को प्राप्त होते हैं, इसलिए तू सुख रहित और क्षण भंगुर इस मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर निरन्तर "मेरा" ही भजन कर।

mam hi partha
vyapasritya ye'pisyuh
papa-yonayah
striyo vaisyastatha
sudraste' pi yanti param
gatim 9:32
kimpunarbrahmanah
punya bhakta

rajarsayastatha
anityamasukhamlokam
imam prapyabhajasva
mam 9:33

O' Arjuna! women, merchants, workers or one who is full of sin or anyone else, once they surrender unto me, get the supreme destination. Righteous Brahamins, the devotees and saintly kings also achieve the supreme destination. So, having come to this temporary miserable world, remember me.

But we see that even though BhagawanShri Krishna has clarified the situation in Geeta, still the man is in delusion and is wandering aimlessly like faithless atheists or else is worshipping the demi Gods or ghosts, enduring extreme pain and ultimately dies and gets a lower state (Adhogati).

Because of **'Kaliyug'**(Dark age), 'tamasik' (dark, evil) powers are ruling the entire world so it is very difficult to get out of the grip of **'trigunamaye'**(having three attributes) 'yogmaya' (divine illusionary power) in this age. It is possible to get deliverance only by complete surrender to Krishna. In this context, Bhagwan Shri Krishna has clearly said in the 14th'Shlok'(verse) of the seventh chapter in Geeta:

दैवी ह्येषा गुणमयी
मम् माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते
मायामेतां तरन्ति ते।। 7:14।।

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी, मेरी योगमाया बड़ी ही दुस्तर है, परन्तु जो पुरुष मुझे ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया को उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।

Daivi hyesa gunamayi

www.the-comforter.org

mam maya duratyaya
mameva ye prapadyante
mayametam taranti te
7:14

This divine energy of mine consisting of three modes of material nature is difficult to overcome. But those who constantly remember me can easily cross over it.

In this situation, it is impossible to get **salvation** by the kind of worship methods prevalent in this age. All the people of the world believe that the powers lying the field of the divine illusionary energy (Trigunmaye Maya) bestows **salvation,** are in delusion due to that.In this context, in the 16th'Shlok'(verse) of chapter eighth in Geeta, Bhagawan Shri Krishna has clarified the situation as: -

आब्रह्मभुवनाल्लो
काः पुनरावर्तिनो अर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय
पुनर्जन्म न विद्यते ।। 8:16।।

हे अर्जुन ! ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र ! मेरे को प्राप्त होकर, उसका पुनर्जन्म नहीं होता है, क्योंकि मैं कालातीत हूँ और यह सब ब्रह्मादिकों के लोक काल करके अवधि वाले होने से अनित्य हैं।

a-brahma-bhuvanallokah
punaravartino' rjuna
mamupetya tu
kaunteya
punarjanma na vidyate
8:16

From the highest planet in the material world down to the lowest, all are places of misery wherein repeated birth and death take place. But one who attains to My abode, 'O' son of Kunti, never takes birth again.

But in spite of this, due to the attributes of this age, people are in so much delusion that they are hoping to get **salvation** by the powers which are actually responsible for bringing one to the cycle of birth and death. Bahgawan Shri Krishna has clearly said in the 66thShlok of chapter eighteenth in Geeta: -

सर्वधर्मान्परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।
18:66।।

सब धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्यागकर केवल एक मुझ सच्चिदानंदघन वासुदेव परमात्मा की अनन्य शरण को प्राप्त हो। मैं तेरे को संपूर्ण पापों से मुक्त कर दुंगा। मैं यह दृढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ, तू शोक मत कर।

sarva-dharmanparityajya
mamekam
saranam vraja
aham tva msarva-
papebhyo moksayisyami
ma suchah 18:66

Abandon all varieties of religion and just surrender unto me.I shall deliver you from all sinful reactions.Do not fear.

Despite this people of the world are abandoning that eternal **Supreme Power** and are getting attracted to the illusory power (Maya). The world is being ruled by 'tamsik'(dark or evil) powers completely.

In India this darknessis maximum. I feel great pain when spiritual teachers talk against the truth of physical science. Such people are not only ruining their own life but are also adding to their sins by putting ignorant people in danger in the name of religion.

In such a situation, Hindus of India will never be able to inspire the people of the world, however hard they may try. In India, right now neither religion nor truth, honesty and patriotism are left. Till we accept this bitter truth and find a cure to this illness, our well being is impossible.Applying tilak, colouring the clothes or skin is not going to work.

This illness will be cured only by colouring the **'Mann'**(mind) with the name of Krishna since 'mann' alone is responsible for making us do what we do. The great saint Meerabai has rightly said," Apne hi rang me rang de chunariya"(colour my scarf in your own colour-implyingrequesting Krishna to colour our body,mind, heart and soul in HIS colours).

3rd April 1988
--Samarth Gurudev
Shri Ramlal Ji Siyag

www.the-comforter.org

Religious Revolution in the World

What are Vrittis?

Each person has certain tendencies, called Vrittis that guide his overall behavior. Tendencies are in turned influenced by the three gunas of Sattva, Rajas and Tamas. Each of these Gunas can be elevated or suppressed through the practice of Yoga, according to The Geeta and 'Yoga Sutras'. Lord Krishna tells his chosen disciple Arjuna in the epic Mahabharata that meditation can help the practitioner develop and strengthen Sattvic or pure tendencies while suppressing Rajasic and Tamasic tendencies so that he/she can gain lasting health and true higher knowledge and self-realization.

In each person, one of these three traits dominates the other two. And the dominant guna or quality in turn influences the person's vrittis, the inner-most subtle tendencies or leanings that determine not only the person's overall mental makeup, outlook on life and actions, but also his dietary preferences or the choice of food and drinks he will consume. The Bhagwat Gita (Chapter 17; stanzas-8.9 & 10) describes what type of food a person with each dominant quality- Sattvic or Rajasic or Tamasic will prefer to eat:

"The foods which promote life, vitality, strength, health, joy and cheerfulness, which are sweet, soft, nourishing and agreeable are dear to the Sattvic." (B.G. 17:8)

"The foods that are bitter, sour, saltish, very hot, pungent, harsh and burning, producing pain, grief and disease are liked by Rajasic." (B.G. 17:9)

"That which is spoiled, tasteless, putrid, stale, refuse and unclean is the food dear to the Tamasic." (B.G. 17:10)

However, the 10th stanza in the 14th Chapter of the Gita says that these tendencies can be positively influenced by invoking and chanting of the divine word or mantra given by a Siddha Guru or spiritual master. The regular chanting of a mantra subdues or suppresses the Rajasic and Tamasic qualities, and elevates the Sattvic quality and eventually consolidates it permanently. The dominance of the Sattvic quality in turn propels orientation of the person's inner tendencies toward positive, conscious, intelligent and pure thinking and actions. So does his preferences of food and drinks. The overall result of this change is that whatever that is negative and detrimental to the person's physical and mental wellbeing and spiritual evolution leaves him of its own accord—without the person's conscious efforts to make this happen. Thus, if the person is afflicted with addiction to drugs, alcohol or smoking, the addiction will leave him like the false skin falling off a tree automatically or if he is attached to the kind of food that is harmful to his health, he will gradually develop a natural dislike for it and turn to the palate that is healthy because of the change in his inner qualities and tendencies brought on by the chanting of the mantra and meditation.

The End...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

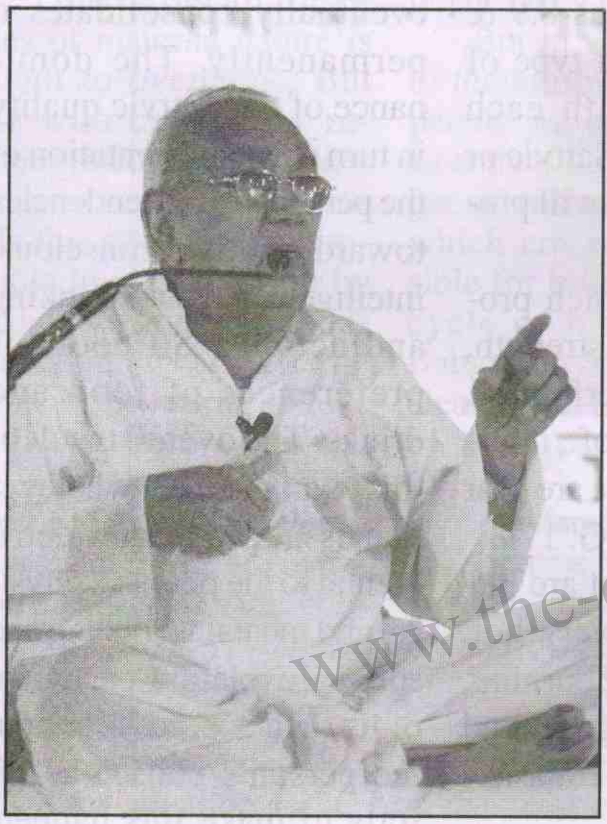

भारतीय योग दर्शन त्रिविधि ताप शान्त करने की बात करता है-आदि दैहिक, आदि भौतिक, आदि दैविक। अंग्रेजी भाषा में फिजीकल डिजीज, मेन्टल डिजीज और स्पिरिचुअल डिजीज। इससे बाहर कोई बीमारी नहीं होती तो कोई भी रोग ऐसा नहीं है जिसे भारतीय योग दर्शन में क्योर (ठीक) करने की शक्ति नहीं है।

वर्तमान योग शारीरिक कसरत है और आज जो योग करवाया जा रहा है, उससे तो ऑर्थोपेडिक सर्जन जो फिजियोथेरेपी बताते हैं, वो ज्यादा करेक्ट है, इन योग सिखाने वालों से। वो योग नहीं है, योग का संचालन कुण्डलिनी करेगी।

कुण्डलिनी उन्हीं अंगों का मूवमेन्ट (क्रियाएँ) कराएगी, जो अंग बीमार है, प्रोपरली फंक्शन नहीं कर रहे हैं, इसलिए हरेक साधक को अलग-अलग योग होता है। किसी के कोई गड़बड़ है, किसी के कोई गड़बड़ तो उस सिस्टम को, फिजीकल बीमारियों को ठीक करने के लिए कुण्डलिनी योग करवाती है और जब तक वो सिस्टम बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाता, तब तक वो ऊपर नहीं बढती है।

इस प्रकार आप ध्यान करोगे, ध्यान की स्थिति में योग होगा, चलते-फिरते नहीं होगा। आपकी इच्छा के विपरीत कुछ काम नहीं होगा, घबराने की जरुरत नहीं है। जब योग होता है तो देखने वाला घबरा जाता है, पता नहीं इसको क्या तकलीफ होती होगी? मगर जिसको होता है, उसको कुछ ऐसा असीम आनन्द आता है (जो शब्दातीत है)। असली जीवन तो यहीं से (आध्यात्मिक आराधना) शुरू होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

(२०) जब तक साधक में काम-क्रोध-लोभ का सबीज नाश नहीं हो जाता, तब तक उसका भय का संकट दूर नहीं होता। यह सब आसक्ति तथा राग-द्वेष का परिणाम है। साधन से यह कुछ समय के लिए दब जाते हैं तथा कुछ समय के पश्चात् पुनः सिर उठा लेते हैं। ज्ञानी, तपस्वी, योगी भी, इनका आक्रमण होने पर, इनके समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं। साधक के इन विकारों के परस्पर युद्ध को ही साधना कहा जाता है।

(२१) साधक को जितनी तथा जिस प्रकार साधन करने की आवश्यकता हैं, प्रायः कर नहीं पाते। जिस प्रकार का समर्पण, मन का भाव, व्यवहार की शुद्धि तथा साधन में निरन्तरता की आवश्यकता है, वह साधकों में कम ही देखने में आती है। वाणी पर नियंत्रण नहीं होता, समय का अपव्यय रोक नहीं पाते, अनावश्यक प्रवृत्तियों में रुचि होती है, क्रोध में बेकाबू हो जाते हैं, जिससे साधन में जिस भाव तथा समर्पण की आवश्यकता होती है, वह नहीं रख पाते।

(२२) साधन में उन्नति के लिए गाम्भीर्य की नितान्त आवश्यकता है। यह जरूरी नहीं कि हर बात का उत्तर दिया ही जावे। साधक को बहुत कुछ सुनकर पचा जाना पड़ता है। उसका पेट गणेशजी की तरह बड़ा होना चाहिए। जगत् स्वयं भी अनावश्यक बातों तथा कामों में उलझा है तथा साधक को भी अपने साथ घसीट ले जाना चाहता है। साधक की अपनी चित्त स्थिति पर आधारित है कि वह जगत्-प्रवाह में बह जाए या साधक बना रहकर, साधन में तत्पर रहे। वैसे जगत् में रहना है तो किसी सीमा तक जगत् के साथ भी चलना ही पड़ता है, पर चलना ऊपरी होता है, मन पर साधक को प्रभाव ग्रहण नहीं करना चाहिए। प्रायः साधक इस संकट का समाधान एकान्तवास में खोजते हैं। किसी सीमा तक यह भी ठीक है, किन्तु सभी के लिए यह संभव नहीं ।

(२३) किसी भी समय अपने मन को बिना काम मत रहने दो, साधन, जप, अध्ययन, कीर्तन अथवा कोई शारीरिक श्रम करते ही रहो, अन्यथा मन उपद्रव खड़ा कर देगा। कहा भी है कि खाली मन शैतान का कारखाना होता है। शारीरिक श्रम करते समय भी संभव हो तो साथ-साथ जप करते रहो। अन्यथा हाथ भी चलते रहेंगे तथा मन भी उड़ता रहेगा।

(२४) भय, क्रोध, काम, लज्जा, आश्चर्य आदि भाव भी क्रियाओं में प्रकट होते हैं, क्योंकि इन सब के संस्कार चित्त में एकत्रित हैं, जिनको उदय करके शक्ति, उसी भाव के अनुरूप चित्त को तरंगित कर देती है। साधक को सावधानीपूर्वक इन विपरीत तरंगों को सहन करना होता है। स्मरण रहे कि इन तरंगों की कर्ता भले ही क्रिया-शक्ति हो, किन्तु यह तरंगें संस्कारों की ही हैं। उनके वेग को सहन करते हुए, वेग को समाप्त करना ही साधक का कर्तव्य है। साधन-समय की यह आन्तरिक सहनशीलता बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे संस्कार वेगवान् होकर क्षीण हो जाते हैं। यदि साधक इस वेग में बह जाता है तो संस्कार और भी अधिक पुष्ट हो जाते हैं ।

(२५) साधन में बैठते समय साधक को कोई सांसारिक कामना मन में लेकर नहीं बैठना चाहिए। शक्ति ज्ञानवती होने से आपकी सभी आवश्यकताओं

तथा कामनाओं से भलीभाँति अवगत है। जिसमें आपका हित होगा शक्ति वही प्रदान करेगी। साधक अल्पबुद्धि होने से, अपने भले-बुरे का निर्णय कर पाने में असमर्थ है । हो सकता है कि आपकी कोई कामना बड़ी प्रबल हो, किन्तु उसकी पूर्ति में साधक का अहित हो। फिर कामनापूर्ति में प्रारब्ध का भी बड़ा हाथ है। जीव तो ऊँची-ऊँची कामनाएँ करता है, किन्तु प्रारब्ध में होता है वही मिलता है।

साधन-पथ कामनाओं का नहीं, त्याग का मार्ग है। जो मिल जाए उसी में सन्तुष्ट रहना, जैसी क्रिया हो, उसी को गुरु कृपा समझना, सात्त्विक क्रियाओं में आसक्त नहीं हो जाना, तामसिक अथवा राजसिक क्रियाओं से घृणा नहीं करना। सभी क्रियाएँ मंगलकारी हैं। क्रिया होती है, निकल जाती है। किसी विशेष प्रकार की क्रिया की कामना करना कर्तव्य नहीं। इसीलिए साधक को समर्पण भाव धारण करने का उपदेश दिया जाता है। मानसिक कामना करने से शक्ति की क्रिया नहीं, कामना की क्रिया होती है।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

अतः निश्चित रूप से प्रतिभावान और सन्त जन्म ले चुके हैं तो यह अनिवार्य है कि मनुष्य अपने अंदर और अपने अंदर के अतिमानव को, सिद्ध पुरुष को विकसित करे। इस निष्कर्ष के लिये किसी भविष्य सूचक शक्ति या अन्तः प्रकाश की जरूरत नहीं है। यह प्रकृति की विस्तृत प्रयोगशाला में हमारे लिये, किये गये पिछले प्रदर्शनों का अनिवार्य परिणाम है।

हमें प्रकृति के परे जाना है, अतिप्राकृतिक बनना है। जो मैंने कहा उसके अनुसार स्वयं प्रकृति के अंदर बंद किसी चीज का लाभ उठाते हुए, किसी ऐसी रेखा पर चलते हुए जिसे प्रकृति हमारे लिये खोलने का प्रयास कर रही है, हमें आगे बढ़ना चाहिये। अपनी सामान्य प्रकृति के आगे झुकन से हम स्वयं प्रकृति के और भगवान् दोनों से गिर जाते हैं। प्रकृति के परे जाकर हम एक ही साथ, उसकी सबसे शक्तिशाली प्रेरणा को सन्तुष्ट करते हैं, उसकी समस्त संभावनाओं को पूरा करते हैं और भगवान् की ओर उठते हैं।

मनुष्य पहले भगवान् का स्पर्श करता है और फिर भगवान ही बन जाता है। लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो आत्मा बनने के लिये प्रकृति की हत्या करना चाहते हैं। क्या हम उनका अनुसरण करें ? नहीं। उनका मार्ग चाहे जितना महान् और उच्च हो, उनकी अभीप्सा चाहे जितनी विस्मयकारी और चुंधियानेवाली क्यों न हो, फिर भी नहीं। क्योंकि मानव जाति में भगवान् का यह इरादा नहीं है इसलिये यह हमारा निजी धर्म नहीं हो सकता। किसी को यह कहने दो कि हमने निचला चुनाव किया है। हम गीता की भाषा में उत्तर देते हैं। श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः -- हमारी अपनी सत्ता का धर्म ज्यादा श्रेयस्कर है, चाहे वह घटिया ही क्यों न हो, दूसरी सत्ता का धर्म श्रेष्ठतर होते हुए भी भयावह होगा। अपने अंदर के भगवान् की आज्ञा मानना निश्चय ही अधिक आनन्दपूर्ण और शायद अधिक दिव्य होगा।

अद्वैतवादी की कठोर ऊँचाइयों पर उठने और अनिर्वचनीय सत् में अकथनीय आत्मविलोपन में ऊपर उठने की अपेक्षा हमारे लिये कृष्ण का आलिंगन और काली के शक्तिशाली वक्ष की महिमा काफी है।

हमें प्रकृति के परे जाना और उस पर अधिकार करना है, उसकी हत्या नहीं करनी। बहरहाल अपवादिक लोगों का जो भी चुनाव हो, **हम मानवता के लिये परम उपलब्धि का व्यापक मार्ग खोज रहे हैं।** मैं तुम्हारे सामने योग के किसी वैयक्तिक मार्ग का प्रस्ताव नहीं रख रहा, जिसका बाकी मानव जाति के साथ कोई संबंध न हो-और इस मामले में शंका या संकोच का कोई स्थान नहीं है। हमारा सच्चा मार्ग न तो आध्यात्मिकता का अतिरंजन है, न भौतिकता का अतिरंजन। मानवता का हर व्यापक आन्दोलन, जो प्रकृति को नकारता हो वह चाहे जितना धार्मिक, महान्, तपस्यामय, चाहे जितनी चमकती शुद्धि या वायवीयता से भरा हो, वह हमेशा असफलता, रुग्ण निराशा, मोहभंग और विकृति के लिये अभिशप्त है और रहेगा।

क्योंकि यह जनसाधारण के अतिरंजन के क्षणिक आवेग के स्वभाव में है, क्योंकि यह हमारे लिये भगवान् की शर्त को नकारता है, जिन्होंने (भगवान् ने) इस विश्व में अपनी आत्म-परिपूर्ति के लिये प्रकृति को एक अनिवार्य अवस्था के रूप में रखा है और हमें धरती पर उस भागवत आत्म-परिपूर्ति के श्रेष्ठ यंत्र और सहायक का रूप दिया है। मानव जाति का हर आन्दोलन जो हमें सामान्य प्रकृति से सन्तुष्ट रहने के लिये कहता है, धरती पर रहने के लिये, अपने अंदर के स्वर्ग के लिये, अभीप्सा बंद करने के लिये और उसकी जगह पशुओं जैसा जीवन चुनने के लिये कहता है और अपने आगे के मर्त्य भविष्य की ओर देखने के लिये, ऊपर भगवान् की ओर, ऐसी पूर्णता की ओर देखने की जगह जिसे हम अभी तक पकड़ नहीं पाये हैं, नीचे धरती की ओर देखने के लिये कहता है, जिसे हम जोतते हैं।

ऐसे आन्दोलन क्रान्ति, अश्मीकरण और अवसान या द्रुत, प्रचण्ड, अतिप्राकृतिक प्रतिक्रियाओं के लिये अभिशप्त रहे हैं क्योंकि यह भी जन साधारण के लिये अतिरंजना का क्षणिक आवेग है और चूंकि वह हमारे अंदर भगवान् के इरादों को नकारता है, उन भगवान् के इरादे को, जो हमारी प्रकृति में उतर आये हैं और गुप्त रूप से निवास करते हैं, और हमें एक अंधेरे, नैसर्गिक, विजयी आकर्षण द्वारा भगवान् की ओर जाने के लिये बाधित करता है। ❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के आधार

श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब तुम अपनी सत्ता की शक्ति की ओर खोले रखो और अपने समस्त अहंकार का सभी माँगों और वासनाओं का, एकमात्र भागवत सत्य को पाने की अभीप्सा के अतिरिक्त अन्य सभी प्रवृत्तियों का लगातार त्याग करते रहो। अगर तुम ऐसा ठीक-ठीक कर लो तो भागवत शक्ति और ज्योति कार्य करना आरंभ कर देंगी और तुम्हारे अंदर शांति और समता, आंतरिक बल, विशुद्ध भक्ति, क्रमवर्धमान चेतना और आत्मज्ञान ला देंगी, जो कि योग सिद्धि के लिये आवश्यक आधार है।

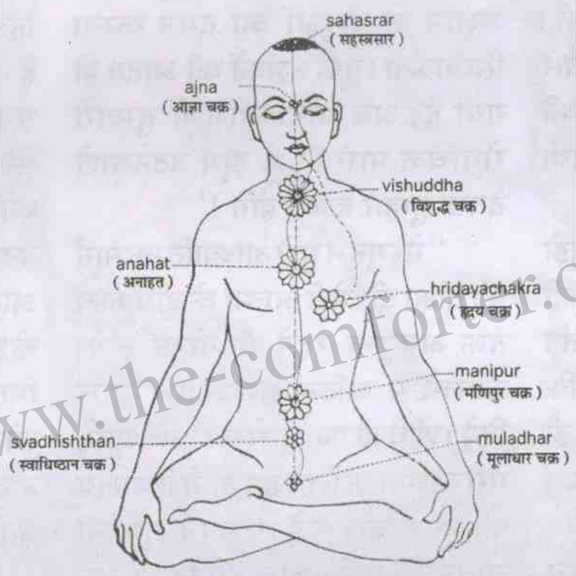

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

तुम्हारे लिये एकमात्र सत्य है-अपने अंदर भगवान् को अनुभव करना, परम शक्ति की ओर उन्मुक्त होना और भगवान् के लिये कर्म करते रहना जब तक कि तुम्हें अपनी सभी क्रियाओं में शक्ति की उपस्थिति का बोध न होने लगे। तुम्हें इस बात की चेतना रहनी चाहिये कि तुम्हारे हृदय में भगवान् विराजमान हैं और तुम्हारे कर्मों का वही परिचालन कर रहे हैं। इस बात को हृत्पुरुष बड़ी आसानी से, तेजी से और गहराई के साथ अनुभव कर सकता है यदि वह पूर्ण रूप से जाग्रत हो और एक बार यदि हृत्पुरुष यह अनुभव प्राप्त कर ले तो फिर यह अनुभव मन और प्राण तक भी प्रसारित हो सकता है।

तुम्हारी दूसरी अनुभूति में -जो कि, तुम कहते हो, उस समय तुम्हें इतनी सच्ची मालूम हुई थी- एकमात्र सत्य यही है कि तुम्हारे लिये या किसी भी साधक के लिये, बिना किसी सहायता के, केवल तुम्हारे या उसके अपने ही प्रयास के बल पर, निम्नतर चेतना से बाहर निकलना अत्यंत कठिन है। यही कारण है कि जब तुम इस निम्नतर चेतना में डूब जाते हो, तब तुम्हें सब कुछ कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि कुछ समय के लिये तुम सभ्य चेतना को खो बैठते हो। परंतु यह सुझाव ठीक नहीं है, क्योंकि तुम्हारे भीतर एक जगह भगवान् की ओर उद्घाटन हो चुका है और तुम इस निम्नतर चेतना में रहने के लिये बाध्य नहीं हो।

जब तुम सत्य-चेतना में रहते हो, तब तुम्हें यह दिखायी देता है कि सब कुछ किया जा सकता है, यद्यपि अभी सामान्य आरंभ ही हुआ है। परंतु एक बार यदि दिव्य शक्ति और सामर्थ्य आ जायें, तब आरंभ ही पर्याप्त है। कारण सच बात तो यह है कि यह शक्ति सब कुछ कर सकती है और संपूर्ण परिवर्तन और अंतरात्मा की संसिद्धि के लिये केवल समय एवं अंतरात्मा की अभीप्सा की आवश्यकता है।

क्रमशः अगले अंक में... ❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

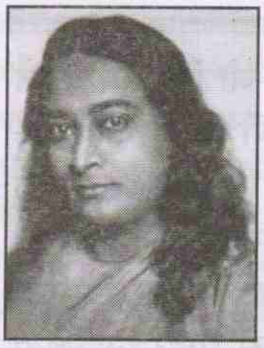

मेरे घावों का प्राथमिक उपचार करने के बाद मेरा सम्मान किया और मुझे पुष्पहार पहनाये गये। मेरे चरणों में स्वर्ण मुहरों की वर्षा की गयी। असाधारण रूप से विशाल और वैसे ही क्रूर बाघ पर मेरी विजय की अन्तहीन चर्चाएं चारों ओर से सुनायी दे रही थीं।

वचन के अनुसार राजाबेगम मुझे दे दिया गया, परन्तु मुझे कोई हर्ष नहीं हुआ। मेरे हृदय में आध्यात्मिक परिवर्तन आ गया था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पिंजरे से बाहर निकलने के साथ ही मैंने संसार में अपनी महत्वाकांक्षाओं का द्वार भी बंद कर दिया था।

''उसके बाद का कुछ समय अत्यंत वेदना और मनस्ताप में बीता। रक्त में विष फैलने के कारण छह महीनों तक मैं मरणासन्न अवस्था में पड़ा रहा। कूचबिहार छोड़ने योग्य ठीक होते ही, मैं अपने गाँव लौट आया।

'' 'अब मैं जान गया हूँ कि जिन साधु ने सावधानी का विवेकपूर्ण इशारा दिया था वही मेरे गुरु हैं।' एक दिन विनम्रतापूर्वक मैंने पिताजी से कहा 'काश ! मैं किसी प्रकार उन्हें ढूढ़ पाता !' मेरी लालसा सच्ची थी, क्योंकि एक दिन वही संत बिना किसी सूचना के हमारे घर पधारे।

'' 'बाघों का दमन बहुत हो गया।' शांत अधिकार पूर्ण वाणी में वे बोल रहे थे। मेरे साथ आओ; मैं तुम्हें मानव-मन के जंगलों में विचरने वाले अज्ञान के पशुओं का दमन करना सिखाऊँगा। तुम्हें दर्शकों की आदत हो गयी है; अब योगाभ्यास में तुम्हारी रोमांचक पारंगति से झूम उठनेवाले देवता तुम्हारे दर्शक होंगे !'

''मेरे गुरु ने मुझे आध्यात्मिक मार्ग की दीक्षा दी। मेरी आत्मा के दीर्घकाल तक अप्रयुक्त रहने से मोर्चा लगे, खोलने में कठिन द्वार उन्होंने खोल दिये। शीघ्र ही एक दूसरे का हाथ थामे, मेरी साधना के लिये हम दोनों हिमालय की ओर चल पड़े।' अपने तूफानी जीवन की एक झलक हमें दिखाने के लिये कृतज्ञ होकर चण्डी और मैंने स्वामीजी के चरणों में प्रणाम किया। मुझे और मेरे मित्र को लगा कि बैठक में उपेक्षा में की गयी लम्बी प्रतीक्षा का हमें भरपूर प्रतिफल मिला !

प्रकरण - ७

प्लवनशील सन्त

''कल रात एक सभा में मैंने एक योगी को जमीन से कई फुट ऊपर हवा में ठहरे हुए देखा।'' मेरा मित्र उपेन्द्र मोहन चौधरी बड़े ही प्रभावशाली ढंग से बोल रहा था।

मैंने उत्साहपूर्ण मुस्कान के साथ कहा: ''शायद मैं उनका नाम बता सकता हूँ। कहीं वे अप्पर सर्क्युलर रोड़ के भादुड़ी महाशय तो नहीं थे?''

उपेन्द्र ने स्वीकृति में सिर हिलाया। यह बात मुझे पहले ही ज्ञात है। यह देखकर उसका चेहरा थोड़ा उत्तर गया। सन्तों के बारे में मेरी जिज्ञासा से मेरे सभी मित्र भली-भाँति परिचित थे; कोई नयी जानकारी मिलते ही मुझे उनके पीछे लगा देने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था। ''ये योगी महाराज मेरे घर के इतने निकट रहते हैं कि मैं प्राय: उनसे मिलने जाता हूँ।'' मेरे इस कथन से उपेन्द्र के चेहरे पर उत्सुकता के भाव उमड़ते देख मैंने उसे और भी बातें बताना शुरू किया।

''उनके कई कमाल मैंने देखे हैं। पातंजलि' प्रणीत प्राचीन अष्टांग योग के विभिन्न प्राणायाम विधियों में वे निष्णात हैं। एक बार भादुड़ी महाशय ने मेरे सामने भस्त्रिका प्राणायाम इतने जोर से किया कि लगता। था मानो उस कमरे में सचमुच का तूफान आ गया हो !

क्रमश: अगले अंक में...

''जो कुछ हैं-सभी 'गुरु-कृपा' का ही फल है। पुरुषार्थ का अभिमान साधन में विघ्न बनकर उपस्थित हो जाता है। साधक का यही कर्तव्य है कि गुरुदेव पर पूरा भरोसा रखें, तब गुरुदेव अन्तर में आकर बैठ जाते हैं। वही तो साधन करते हैं, रक्षा करते हैं, विघ्नों, संशयों, भ्रांतियों, विकारों, संस्कारों को हटाते हैं।'' - स्वामी विष्णुतीर्थ महाराज, 'अंतिम रचना' से

www.the-comforter.org

कलियुग के प्रथम 'सत्ययुग' की स्थापना के लिए

"अवतार" का आगमन

अवतारों और महान् विभूतियों का आना, सघनता से उठना, एक के पीछे एक आगे बढ़ना, देखो। क्या ये लक्षण नहीं हैं और क्या वे हमें नहीं बताते कि कलि का प्रथम "सत्ययुग" स्थापित करने के लिए सबसे महान् "अवतार" आनेवाला है ?

हाँ, एक नया सामंजस्य संगीत, पर यूरोपीय भौतिकवाद की चरमराहट की आवाज नहीं, अर्ध सत्यों और मिथ्याचारों पर आधारित पाश्चात्य नींव नहीं। जब विनाश होता है तो स्वरूप नष्ट होता है, आत्मा नहीं-क्योंकि संसार और उसके तौर-तरीके एक सत्य के स्वरूप है, जो इस भौतिक संसार में सतत् नये शरीरों में प्रकट होते हैं।... इस चुनी हुई भूमि भारत में "उस सत्य को" सुरक्षित रखा जाता है; भारत की आत्मा में वह सोता है, उस आत्मा के जागरण की प्रतीक्षा में, उस भारतीय आत्मा के जो सिंहवत् है, ज्योतिर्मय है, प्रेम, शक्ति और प्रज्ञा के प्राचीन पद्म की बंद पंखुड़ियों में प्रतिबद्ध है, उसके दुर्बल, मैले, क्षणभंगुर और दयनीय बहिरंगों में नहीं। केवल भारत ही मानव जाति के भविष्य का निर्माण कर सकता है।

संदर्भः-सन् 1910-1912, श्री अरविन्द, 'भारत का पुनर्जन्म' पुस्तक पृष्ठ-96

गतांक से आगे...

! ! मेरे गुरुदेव ! !

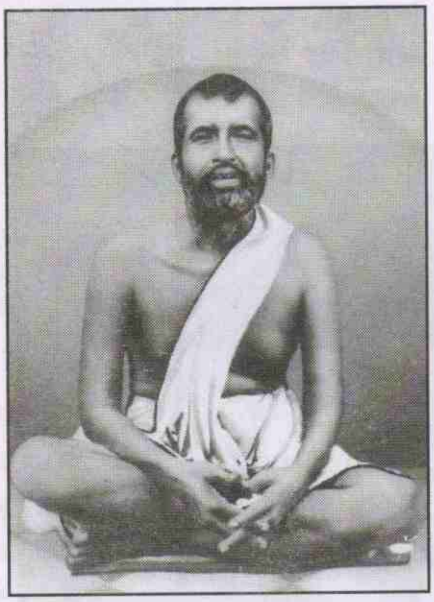

दूसरा एक और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा आश्चर्यजनक सत्य मैंने अपने गुरुदेव से सीखा, वह यह है कि संसार में जितने धर्म हैं, वे परस्पर विरोधी या प्रतिरोधी नहीं हैं-वे केवल एक ही **चिरन्तन शाश्वत धर्म** के भिन्न भिन्न भाव मात्र हैं। यही एक सनातन धर्म चिर काल से समग्र विश्व का आधारस्वरूप रहा है और चिर काल तक रहेगा, और यही धर्म विभिन्न देशों में, विभिन्न भावों में प्रकाशित हो रहा है।

मेरा धर्म अथवा तुम्हारा धर्म, मेरा राष्ट्रीय धर्म तथा तुम्हारा राष्ट्रीय धर्म अथवा नाना प्रकार के अलग अलग धर्म आदि विषय वास्तव में कभी नहीं थे। संसार में केवल एक ही धर्म है। अनन्त काल से केवल एक ही **''सनातन धर्म''** चला आ रहा है और सदा वही रहेगा और यही एक धर्म भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न रीति से प्रकट होता है। अतएव हमें सब धर्मों को मान देना चाहिए और जहाँ तक हो सके, उनके तत्त्वों में अपना विश्वास रखना चाहिए। धर्म केवल विभिन्न जाति या विभिन्न देश के अनुसार विभिन्न होता हो, ऐसी बात नहीं; वरन् पात्र के अनुसार भी वह विभिन्न भाव धारण करता है। किसी मनुष्य में धर्म तीव्र कर्मशीलता के रूप में प्रकट होता है, किसी दूसरे में उत्कट भक्ति के रूप में, किसी तीसरे में योग के रूप में तथा किसी अन्य में तत्त्वज्ञान के रूप में।

हम बड़ी भूल करते हैं, यदि धर्म के विषय में किसी से कहते हैं कि तुम्हारा मार्ग ठीक नहीं है। जो भक्त है, वह शायद यह सोचेगा कि जो मनुष्य कर्ममार्गी है, वह उचित धर्म मार्ग पर नहीं चलता, क्योंकि वह भक्ति का मार्ग नहीं है।

यदि कोई तत्त्वज्ञानी ऐसा सोचता हो कि ये लोग बेचारे कितने अज्ञानी हैं, ये प्रेममय परमेश्वर के विषय में तथा उसे प्रेम करने के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते; वे क्या कर रहे हैं, यही उन्हें ज्ञात नहीं है तो यह उन तत्त्वज्ञानियों की भूल है, क्योंकि हो सकता है कि वे दोनों ही ठीक मार्ग पर हों।

इस केन्द्रीय रहस्य से अवगत होना ही कि सत्य केवल एक है और यह भिन्न भिन्न प्रकार से प्रकट हो सकता है तथा भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों से इसका भिन्न भिन्न स्वरूप दिख सकता है, अनिवार्य कर्तव्य है। तब हम दूसरे के प्रति वैर भाव रखने के बजाय सबके साथ असीम सहानुभूति रख सकेंगे। जब तक इस संसार में भिन्न भिन्न प्रकृति के मनुष्य जन्म लेंगे, तब तक हमें उसी एक आध्यात्मिक सत्य को विभिन्न ढाँचों में ढालना पड़ेगा; यह समझ लेने पर ही हम विभिन्नता के होते हुए भी एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता रख सकेंगे, जिस प्रकार प्रकृति कहने से बहुत्व में एकत्व का बोध होता है, जिस प्रकार व्यावहारिक जगत् में अनन्त भेद हैं, किन्तु इन समस्त भेदों के पीछे अनन्त, अपरिणामी निरपेक्ष एकत्व विद्यमान है, वैसा प्रत्येक मनुष्य के सम्बन्ध में भी सत्य है। व्यष्टि समष्टि की क्षुद्राकार में पुनरावृत्ति मात्र है।

ये सब भेद प्रतीत होते हुए भी इनमें शाश्वत सामंजस्य विराजमान है और इस तथ्य को हमें स्वीकार करना चाहिए। सब विचारों की अपेक्षा यही एक ऐसा विचार है, जिसकी आज सबसे अधिक आवश्यकता है। मैं एक ऐसे देश से आ रहा हूँ, जो विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों का उर्वर जन्मस्थल है और जिसमें उस देश के सौभाग्यवश अथवा दुर्भाग्यवश कहो, प्रत्येक नूतन धर्मवादी अपने अपने अग्रणी भेजना चाहता है।

इस देश में रहने से बचपन से ही संसार के भिन्न भिन्न धर्म-पंथों का मुझे ज्ञान हो गया है। अमेरिका से मोरमन संप्रदाय तक के प्रचारक इस देश में अपने धर्म का प्रचार करने आते हैं। स्वागत है सभी का ! उसीकी धरती पर तो धर्म का प्रचार हो सकता है। अन्य किसी देश की अपेक्षा वहाँ कोई भी धर्म शीघ्र ही अपनी जड़े जमा लेता है।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

कहानी

जड़ भरत की कथा

(स्वामी विवेकानन्द द्वारा कैलिफार्निया में दिया हुआ भाषण)

प्राचीन काल में भरत नाम के एक महान् प्रतापी सम्राट् भारत में राज्य करते थे। विदेशी लोग जिस देश को **'इण्डिया'** कहते हैं, उसे उस देश की सन्तान **'भारत वर्ष'** कहती आयी है। हर एक हिन्दू के लिए आदेश है कि वृद्धावस्था में पदार्पण करते ही वह सर्वस्व त्याग कर, इस संसार का समस्त भार-ऐश्वर्य, धन-सम्पत्ति अपने पुत्र के लिए छोड़ वनगमन करे और वहाँ अपने यथार्थस्वरूप आत्मा का चिन्तन करते-करते इस संसार के मोहों से मुक्ति प्राप्त करे। राजा और रंक, कृषक और किंकर, नर और नारी, सभी इसी प्रकार कर्तव्यबद्ध हैं; क्योंकि गृहस्थ के सारे कार्य - पुत्र, बन्धु, पति, पिता, स्त्री, पुत्री, माता और भगिनी सबके कर्तव्य कर्म - केवल उसी एक अवस्था की ओर ले जानेवाले सोपान मात्र हैं, जिसमें मानव के जड़ बन्धन चिर काल के लिए टूट जाते हैं और वह मुक्त हो जाता है।

सम्राट् भरत भी इसी प्रकार अपना राज्य अपने पुत्र के सुपुर्द कर वनवास करने चले गये। जो एक दिन कोटि-कोटि प्रजा पर शासन करते थे, दुग्ध-धवल संगमरमर के सुवर्ण-मण्डित राजप्रासादों में वास करते थे, जो रत्नजटित चषकों से मदिरा सेवन करते थे, वे ही आज वन में जा, अपने ही हाथों से हिमगिरि की तलहटी के निबिड़ कान्तार के किसी स्रोतस्विनी (नदी)के तीर पर घास-फूस की एक छोटी सी कुटी बनाकर निवास करने लगे। अपने परिश्रम से प्राप्त किये हुए कन्द-मूलों का आहार करते हुए महाराज भरत अपना जीवन उस अन्तर्यामी परमात्मा के ध्यान और चिन्तन में बिताने लगे, जो हर एक मनुष्य में साक्षी रूप से विद्यमान है इस प्रकार दिन, मास और वर्ष बीतने लगे।

एक दिन, जहाँ राजर्षि ध्यानावस्था में बैठे थे, वहीं एक हरिणी पानी पीने आयी। इसी क्षण कुछ दूरी पर एक सिंह ने गर्जना की। हरिणी इतनी भयभीत हो गयी कि तृष्णा शान्त किये बिना ही, उसने नदी पार करने के लिए छलाँग मारी। हरिणी गर्भवती थी, और इस श्रम और भय के कारण उसने तत्काल एक शावक प्रसव कर प्राण छोड़ दिये। मृग-शावक नदी में गिर पड़ा और तीव्र जल-धारा में बहने लगा। उसी समय राजर्षि भरत की दृष्टि उस पर पड़ी। वे ध्यानावस्था से उठकर उसकी रक्षा करने नदी में कूद पड़े। मृग-शावक को कुटी में ले जाकर उन्होंने अग्नि प्रदीप्त की, और अपनी स्नेहपूर्ण हथेलियों से सहला सहला कर उसकी मूर्च्छा दूर की।

करुणा विह्वल हो राजर्षि ने शावक की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया और स्वयं ही हरित तृण एवं फल संग्रह कर उसका लालन-पालन करने लगे। वनवासी राजा का पितृवत् स्नेह पा मृग-शावक दिन दिन बड़ा हो एक सुन्दर हरिण बन गया। और राजर्षि, जिन्होंने जीवन के सम्पूर्ण मोह, अधिकार, सम्पदा और कौटुम्बिक स्नेह के बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर ली थी, सरिता जल से उद्धार किये हुए इस मृग-शावक के मोह-पाश में बद्ध हो गये। ज्यों ज्यों वे उससे अधिकाधिक स्नेह करने लगे, त्यों त्यों उनका ईश्वर-चिन्तन और उपासना कम होती गयी। जब हरिण वन में चरने चला जाता और उसके लौटने में कुछ विलम्ब हो जाता तो राजर्षि चिन्तातुर और दुःखी होने लगते। वे सोचते-कहीं मेरे प्यारे मृग शावक पर किसी सिंह ने आक्रमण तो नहीं कर दिया, उसका कुछ अनिष्ट तो नहीं हो गया, उसे आज क्यों इतनी देर हो गयी?

इस प्रकार कुछ वर्ष बीत गये और महर्षि का मृत्यु-काल समीप आ गया। मरणासन्न होने पर भी, उनका मन आत्मा-चिन्तन में मग्न न था, वे हरिण के विषय में सोच रहे थे और अपने प्रिय शावक की शोक-विह्वल आँखों पर दृष्टि स्थिर रखाते हुए ही वे परलोकवासी हो गये। फलस्वरूप उन्हें मृग रूप धारण कर पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़ा। किन्तु कर्म नष्ट नहीं होता है, पूर्वजन्म के सुकृतों का फल उन्हें प्राप्त हुआ। यह हरिण जन्मतः ही जातिस्मर था, और यद्यपि वह वाचाहीन और चतुष्पाद था, उसे अपने पूर्वजन्म की सब घटनाएँ स्मरण थीं। वह अपने सहचरों का साथ छोड़, स्वभावतः तपोवनों के समीप चरने जाता, जहाँ यज्ञ-होम और उपनिषद्-पाठ होते रहते थे।

आयु पूर्ण होने पर मृगरूपी भरत ने पंचत्व प्राप्त किया और पुनः एक धन सम्पन्न ब्राह्मण के कनिष्ठ पुत्र के रूप में जन्म लिया। इस जीवन में भी उन्हें अपने पूर्व जन्म का विस्मरण नहीं

www.the-comforter.org

हुआ था, और उन्होंने अपने बाल्य काल में ही जीवन के पाप-पुण्य के पाशों से दूर रहने का निश्चय कर लिया। वयः प्राप्त होने पर बालक स्वस्थ और बलवान हो गया, पर वह एक शब्द भी नहीं बोलता था और संसार के मोह-मायापूर्ण व्यापारों में न फँसने के लिए वह जड़-मूढ़ और पागल सा रहने लगा। उसके हृदय में सदा **अनन्त ब्रह्म** का चिन्तन चला करता था और अपने **प्रारब्ध कर्म**, क्षय करने के लिए ही वह जीवन बिता रहा था।

कालक्रम से उसके पिता की मृत्यु हो गयी और पुत्रों ने परस्पर में सम्पत्ति का बँटवारा कर लिया। कनिष्ठ बन्धु को मूक और अकर्मण्य समझकर उसका भी हिस्सा, वे निगल गये। वे उसे केवल जीवन **निर्वाहार्थ** अन्न प्रदान कर देते थे। बस, केवल यहीं तक उनका उस पर अनुग्रह था। उसकी भाभियाँ भी सदैव उससे अत्यन्त कर्कश व्यवहार करती थीं। वे उससे सारे कठिन काम करवाती। और यदि वह उनकी इच्छानुसार काम न करता तो उससे अत्यन्त कठोर व्यवहार करती थी।

किन्तु वह न तो कभी चिढ़ा और न डरा ही, एक शब्द भी न बोलते हुए **धैर्यपूर्वक** सब सहता गया। जब वे उसे बहुत तंग करती तो वह घर से दूर जा एक वृक्ष के नीचे भाभियों का क्रोध शान्त होने तक बैठा रहता और फिर चुपचाप घर लौट आता।

एक दिन उसकी भाभियों ने उसके प्रति अत्यन्त **नृशंस** व्यवहार किया। भरत बिना कुछ बोले घर से निकल गये और किसी वृक्ष की छांया तले विश्राम करने लगे। दैवयोग से उस देश का राजा उसी मार्ग से **पालकी** पर बैठा जा रहा था। पालकी ढोनेवाले कहारों में से एक अचानक ही अस्वस्थ हो गया, इसलिए उसके **भृत्यगण** रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए किसी मनुष्य की खोज में इधर-उधर देख रहे थे। वृक्ष के नीचे बैठे भरत को देख वे वहाँ आये और उन्हें हट्टा-कट्टा देखकर बोले, ''राजा का एक शिविका-वाहक अस्वस्थ हो गया है। क्या तुम उसके स्थान पर काम करोगे?'' भरत कुछ न बोले। उन्हें इतना स्वस्थ देखकर, राजा के भृत्यों ने बलपूर्वक पकड़ लिया और पालकी ढोने को बाध्य किया। भरत फिर भी निःशब्द शिविका-वहन करने लगे। किन्तु शीघ्र ही राजा ने देखा कि पालकी की गति और दिशा सम नहीं है।

पालकी में से झाँक कर राजा ने नये वाहक को सम्बोधित कर कहा, ''अरे मूर्ख! जा आराम कर। यदि तेरे कन्धे दुःख रहे हैं तो थोड़ा आराम कर ले।'' तब भरत ने पालकी नीचे रख जीवन में प्रथम बार अपना मौन भंग किया और बोले, ''हे राजन्, आपने किसे मूर्ख कहा है? किसे आप शिविका रखने का आदेश दे रहे हैं? आप किसे **क्लान्त** कह रहे हैं? किसे **'तू'** कह कर सम्बोधन कर रहे हैं?

राजन्, यदि 'तू' से आपका अर्थ यह मांस-पिण्ड है तो यह उसी पदार्थ से बना है, जिससे आपकी देह, यह अचेतन और जड़ है इसे थकावट और पीड़ा का कैसे ज्ञान होगा? यदि आपका अर्थ मन है तो यह आपके मन जैसा ही है, यह **सर्वव्यापी** है किन्तु यदि 'तू' शब्द से आपका लक्ष्य इससे भी परे किसी वस्तु से है तो वह केवल **आत्म-तत्त्व** ही हो सकता है, जो मेरा यथार्थ स्वरूप है, जिसकी सत्ता आपमें भी है और जो विश्व में **'एकमेवाद्वितीय'** है राजन्, क्या आप सोचते हैं कि आत्मा कभी क्लान्त भी होती है? क्या आप कहना चाहते हैं कि आत्मा कभी आहत भी होती है? राजन्, मैं - यह शरीर - धरती पर रेंगनेवाले इन कीड़ों को पैरों तले कुचलना नहीं चाहता था, और इसलिए उनकी रक्षा के यत्न में पालकी की गति विषम हो गयी थी। किन्तु आत्मा कभी क्लान्त और व्यथित नहीं होती, उसे कभी दुर्बलता प्रतीत नहीं होती और न उसने शिविका-भार ही वहन किया, क्योंकि आत्मा तो **सर्वशक्तिमान** और **सर्वव्यापी** है।'' इस प्रकार भरत ने आत्मा का स्वरूप, **पराविद्या** आदि विषयों का **ओजस्विनी वाणी** में बड़ी देर तक विवेचन किया।

अपने ज्ञान और विद्वत्ता का राजा को अत्यन्त अभिमान था, पर भरत के ये शब्द सुन उसका गर्व चूर्ण हो गया। पालकी से उतरकर उसने भरत के चरणों में प्रणाम किया और कहा, ''महाभाग, मुझे क्षमा करें, आपको शिविका-वहन में नियुक्ति करते समय मैं नहीं जानता था कि आप एक सिद्ध पुरुष हैं।'' भरत, राजा को आशीर्वाद दे विदा हो गये और पुनः पूर्ववत् जीवन-यात्रा शुरू कर दी। देह-त्याग करने पर भरत आवागमन के बन्धनों से सदा के लिए मुक्त हो गये।

हमारी सनातनी परंपरा में आत्मा का परमात्मा से मिलन ही जीवन का **परम लक्ष्य** है। आत्मकल्याण के बिना जीवन के सारे ऐश्वर्य व्यर्थ हैं। हमारी प्राचीन परम्पराओं में 'आध्यात्मिक' और 'भौतिक' दोनों ही तरह के विकास शामिल थे। आज उस महान् परंपरा का, नये सिरे से, मानव से अतिमानव की यात्रा का बिगुल बजा है।

❖❖❖

www.the-comforter.org

AVSK जोधपुर टीम द्वारा सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन
दादा पमाराम मेला विजयनगर, रामदेव मेला सुरतगढ़ (गंगानगर) - (11 से 16 फरवरी 2019)

AVSK जोधपुर टीम द्वारा बालोतरा–पचपदरा ब्लॉक के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर 15 मिनट ध्यान कराया गया। (7 फरवरी 2019)

अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़) के विद्यालय में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (5 फरवरी 2019)

भोपालगढ़ (जोधपुर) के नाड़सर, हीरादेसर आदि गाँवों के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (6 फरवरी 2019)

जोधपुर आश्रम में ध्यान करते हुए जिज्ञासुगण। (17 फरवरी 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर, शाखा-गंगापुर सिटी द्वारा विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (30 जनवरी व 5 फरवरी 2019)

सत्य का साक्षात्कार हुआ

श्री कृष्ण को भजता था और वो ही श्रीकृष्ण, श्री कल्कि रूप में, सद्गुरुदेव भगवान् मिल गये

-सन् 2001 में भोपालगढ़ (जोधपुर) में ईश्वर के दर्शन करने की प्रेरणा जागी, जब मैं 14 वर्ष का था और आटे की चक्की चलाने का कार्य करता था।

-आटा चक्की के मालिक द्वारा की जाने वाली, अनेक देवी-देवतओं और गुरुदेव की तस्वीर की पूर्जा-अर्चना से, मेरी आत्मा में ईश्वर के प्रति भक्ति भावना आई।

-ईश्वर और गुरु के प्रति कोई ज्ञान नहीं था।

-जब पहली बार गुरुदेव और दादा गुरुदेव की तस्वीर देखी तो मन में यही विचार आया कि ये कौनसे भगवान् है ?

-सन् 2007 में जोधपुर आश्रम में दीक्षा ली तो पहले दिन ही मालूम हुआ कि ये ही श्री कृष्ण के अवतार है।

-अब सब संशय खत्म, अब केवल श्री सद्गुरुदेव कृपा ही केवलम्।

परम् पूज्य दसवें अवतार कल्कि भगवान् सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को कोटि-कोटि नमन व वंदन। जिनकी असीम कृपा से मुझे परम् सत्य का साक्षात्कार हुआ, जिसकी व्यख्या मैं शब्दों में नहीं कर सकता।

मैंने पूज्य सद्गुरुदेव से सन् 2007 में दीक्षा ली थी। दीक्षा लेने के दिन ही मेरा जीवन बदल गया।

गुरुदेव से दीक्षा लेने से पहले का जीवन- पहले मेरी श्रध्दा केवल श्री कृष्ण पर थी और किसी पर भी नहीं थी। सन् 2001 की बात है, मैं भोपालगढ़ में आटा चक्की चलाता था, वहाँ पर जिनके यहाँ मैं नौकरी करता था, वहाँ गुरुदेव व दादा गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी की छोटी सी तस्वीर लगी हुई थी और अनेक अवतारों-कृष्ण,राम, नरसिंह, शिवजी आदि के चित्र लगे हुए थे। मैं उस कमरे में हमेशा झाड़ू लगाया करता था। उस समय सब चित्रों को देखकर यह सोचता कि कौनसा भगवान् सबसे ज्यादा शक्तिशाली है ? मैं दुविधा में फंस गया, उस समय मैं चौदह वर्ष का था। घर में जो पूजा करते थे, उन्हें मैं बड़े ध्यान से देखता था। वह सब सुबह चार बजे उठते, स्नान वगेरह करके भगवान् के सभी चित्रों पर अगरबती करते थे।

जिन चित्रों के बीच परम् पूज्य गुरुदेव व दादा गुरुदेव का छोटा सा चित्र लगा हुआ था।

वह महाराज गीता और रामयण के पाठ करते थे। मैं मन में सोचता था कि इतने भगवान् कितने दिनों में राजी अर्थात् प्रशन्न होंगे ? राम के आगे अगरबत्ती ज्यादा घुमाई तो कृष्ण जी सोचेंगे, मेरे आगे कम और दूसरे भगवान् भी यही सोचेंगे, किन-किन को प्रसन्न रखें ? यह सोचता और चिंता होने लगती। उन सब चित्रों के बीच गुरुदेव के चित्र का, एक अलग ही खिंचाव था। मैं सोचता था बाकी तो सब ठीक है, यह चित्र किनके है ? एक दिन मैंने उनसे पूछ लिया कि यह इस चित्र में कौन हैं तो उन्होंने बताया कि यह रेलवे में नौकरी करते थे (गुरुदेव के चित्र की ओर इसारा करते हुए) और इनको भगवान् के दर्शन हो गए है और इनके साथ वाला चित्र इनके गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी का है जिन्होंने इनको भगवान् के दर्शन कराये।

यह सुनते ही मेरे मन में खलबली मच गई। मैंने सोचा इनको अगर भगवान् के दर्शन हो सकते है तो मुझे क्यों नहीं ? मुझे अन्दर से संसार झूठा नजर आने लगा और वैराग्य हो गया। काम में मन नहीं लगता था। कोई अच्छा

www.the-comforter.org

नहीं लगता सिवाय भगवान् के, दर्शन के, दर्शन कब होगें ? कैसे होंगे ? होंगे कि नहीं व कौन करायेगा ? यह सोचता और दुःखी रहता और अकेला होता तब आँखों बंद करके रोता रहता था। हालांकि गुरुदेव के चित्र को तो मैं उसी समय भूल गया था लेकिन यह सोचता था कि अगर भगवान् के दर्शन नहीं हुए तो यह जीवन बेकार चला जायेगा, यह सोचकर बड़ी चिंता होती थी। उस समय मुझे कुछ पत्ता नहीं था कि ध्यान क्या है ? जब मैं अधिक गंभीर होता और आँख बंद करके करूण पुकार करता तो मुझे ललाट पर ''नीलबिन्दु'' नजर आता था और उस नील बिंदु के अन्दर श्री कृष्ण के बालरूप की छवी धुंधली नजर आती थी।

उस समय मैं यही सोचता कि यह ऐसे ही दिख रहा होगा, काल्पनिक होगा। जहाँ मैं रहता था, वहाँ से करीब तीन किलोमीटर की दूरी पर एक साधु, एक तालाब के किनारे, एक कमरे में रहते थे। उनके लिए मैं हमेंशा सुबह दही और दूध पहुँचाने के लिए जाता था, आटा चक्की के मालिक के कहने पर। मैंने एक दिन उस साधु बाबा से कहा कि ''मुझे भी साधु बना दो, मुझे भगवान् के दर्शन करने है।'' क्योंकि मैं सोचता था कि साधु बने बिना भगवान् के दर्शन नहीं होते होंगे। उन्होंने कहा कि ''तेरे माता-पिता गालियाँ देंगे कि इस बाबा ने मेरे बेटे को भी छीन लिया है।''

ऐसा कह कर उन्होंने मुझे बताया कि **''अगर तुम सचमुच में भगवान् के दर्शन को आतुर हो तो तुम्हें एक दिन अवश्य भगवान् के दर्शन होंगे, और यह वैराग्य हर समय रहने वाला नहीं है।''** मैंने कहा ''मेरा किसी भी काम में मन नहीं लगता है'' तो उन्होंने कहा कि ''नौकरी छोड़कर घर चला जा'' ''मैंने कहा मेरे पास किराया नहीं है और चक्की मालिक मुझे घर नहीं जाने देंगे'' तो साधु ने मुझे 50 रुपये किराये के लिए दिये और मैं वहाँ से घर आ गया। उस समय मोबाइल फोन हर किसी के पास नहीं होता था, घर आया तो घर वालों को मेरा ऐसा व्यहवार देखकर चिंता होने लगी और डांटने लगे कि अभी भगवान् नहीं मिलेंगे।

मैंने कहा **''मैं साधु बन जाऊँगा,** माँ-बाप सब स्वार्थ के हैं।'' तो घर वाले घबराने लगे कि वास्तव में यह साधु बन जायेगा और मेरा ध्यान इधर-उधर बंटाने

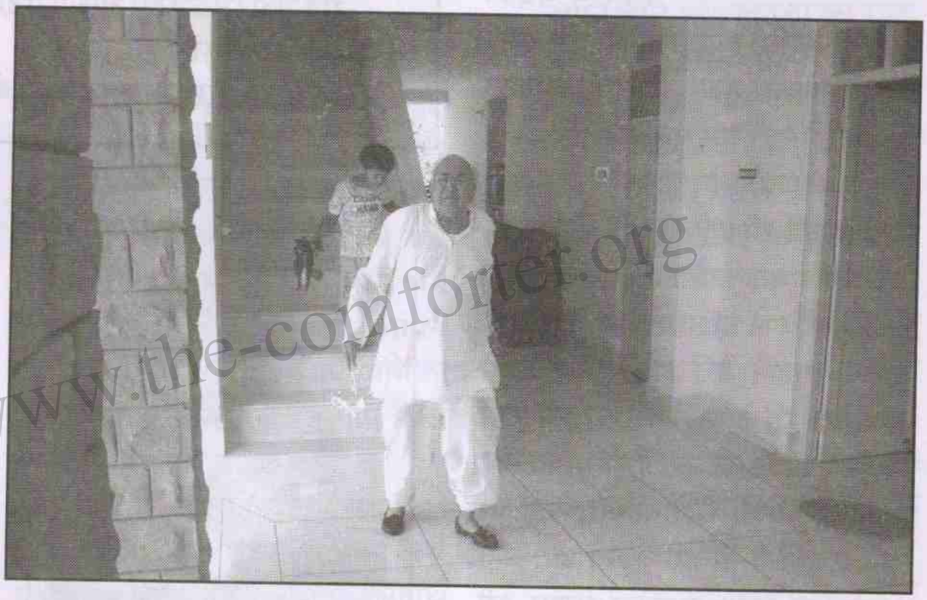

लगे और कहने लगे ''भगवान् का नाम अभी नहीं लेना है, अभी तो मजदूरी करो, हमने बड़ी मुश्किल से तुम्हारा पालन-पोषण किया है।'' समय बीतता गया, मैं भी भूल गया।

2005 में मेरी शादी हुई उस समय मुझे अन्दर से एक अजीब चिंता होने लगी कि कहाँ फंस गया अब भगवान् के दर्शन नहीं होंगे, ऐसा महसूस होने लगा जैसे पूरे शरीर के ऊपर भारी पहाड़ रख दिया हो। चिंता व भय लगने लगा, नींद नहीं आती थी, किसी को बताता तो मेरे ऊपर हँसते थे और कहते थे कि ''इतनी छोटी ऊमर में चिता किस बात की।'' मैं मौन रहता था, भूख लगना, नींद आना सब बंद हो गया, नींद आती भी तो भंयकर सपने आते थे और पूरी रात अपने-आप कहानियाँ बनती और गहरी सोच में डूब जाता था।

सोचता था, ऐसे जीवन से मर जाना अच्छा है। अब कहीं का नहीं रहा, भीड़ में जाता तो सोचता कि इतने लोग कहाँ जायेंगे ? कहाँ से आये हैं ? भगवान् के घर में इतनी जगह है या नहीं, कितने भगवान् होंगे, मैं कहाँ जाऊँगा, कहाँ से आया, मेरा क्या होगा आदि ? घबराहट होती थी फिर घर वालों से, चुपके से दवाईयाँ भी लाया, उसका सेवन भी छुपकर करता था, दवाई खाता तो नींद आती नहीं तो पूरी रात जागता रहता था। किसी से भी बात नहीं करना, अकेले रहना ऐसी स्थिति हो गई थी।

2005 से 2007 तक ऐसा ही चलता रहा, तभी मैंने गुरुदेव के पोस्टर गाँव में चिपके हुए देखे, जिसमें बीमारियाँ ठीक होने का लिखा था। मैंने सोचा मेरे को कोई बीमारी तो है नहीं, इसलिए मेरे को विश्वास नहीं हुआ। 2001 की बात

को मैं भूल गया था। फिर मुझे किसी के द्वारा गुरुदेव के चित्र वाला कार्ड मिला वही 2001 का चित्र, चित्र देखते ही मुझे पुरानी बात याद आ गई और उस कार्ड पर लिखा था-**गृहस्थ जीवन में रहते हुए ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार संभव। यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी।** मेरे मन जो बोझ था, वह हल्का हो गया, जो साधु बनने की इच्छा थी, वह खत्म हो गई। मुझे इतनी जानकारी नहीं थी कि गुरुदेव से कैसे मिलें? कार्ड में ध्यान की विधि लिखी थी, मैंने ध्यान लगाना शुरू किया। पूरी जानकारी न होने की वजह से कभी, मैं राम-राम, कभी कृष्ण, कभी शिव तो कभी ओम नाम का जप करता था लेकिन ध्यान नहीं लगता था।

एक दिन योग-संयोग से मेरे ताऊजी का बेटा ओमप्रकाश जी जो अध्यापक है, उनसे गुरुदेव के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि गुरुदेव अभी अमेरिका गए हुए हैं। उन्होंने बताया कि **''गुरुदेव एक मंत्र देते हैं, उस मंत्र में बहुत शक्ति है और उस मंत्र का जप करने से ईश्वर से साक्षात्कार हो जाता है और अपने-आप योग होता है।''**

मैंने कहा ''वह मंत्र आप मुझे बता दो'' तो उन्होंने कहा **''वह मंत्र गुरुदेव के श्रीमुख से सुनने पर ही काम करता है।''** मैं ओमप्रकाश के पीछे दो महीने तक पड़ा रहा लेकिन उन्होंने मंत्र नहीं बताया। मुझे मंत्र प्राप्त करने की जल्दी हो रही थी, मैंने उनसे कहा कि ''मुझे कैसे ही करके गुरुदेव के दर्शन करा दो।''

2007 का जुलाई या अगस्त का महीना गुरुवार के दिन ओमप्रकाश ने बताया कि गुरुदेव अमेरिका से आ गए हैं, दर्शन करना है क्या? मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा! गाड़ी किराये करके हम लोग जोधपुर आश्रम गये। काफी लोग थे, सभी पंक्तिबद्ध बैठे हुए थे। मैं भी पंक्ति में बैठ गया। एक गुरुभाई कुछ जानकारी दे रहे थे, कुछ समय बाद माइक से बताया कि गुरुदेव पधार रहे हैं।

जैसे ही मैंने गुरुदेव को आते देखा, मेरे रोम-रोम खड़े हो गए। मुझे अन्दर से

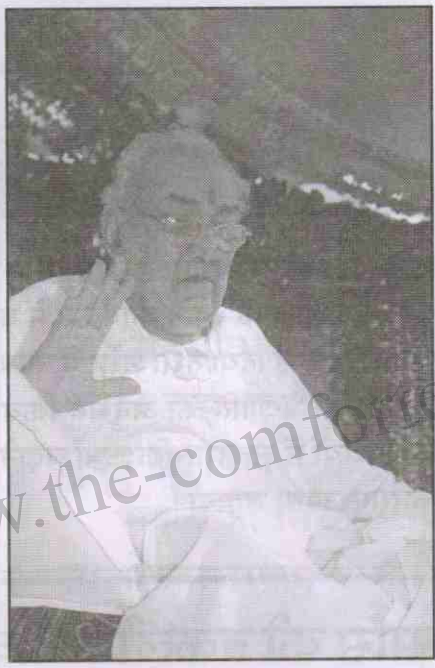

अपने आप ऐसा लगा कि यह तो श्री कृष्ण ही है, यह एक दम सत्य है। मुझे पहले इतना पता था कि मुझे गुरुदेव श्री रामलालजी को गुरु बनाना है। मैंने ऐसा नहीं सोचा था कि वह भगवान् है। गुरुदेव मंच पर पधारे और सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी। उस समय मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया। कुण्डलिनी क्या है ?आदि भौतिक विज्ञान क्या है ? मुझे कुछ भी पले नहीं पड़ा। मेरा ध्यान गुरुदेव पर था और मंत्र की प्रतीक्षा कर रहा था, गुरुदेव को एकटक देख रहा था, तभी गुरुदेव ने मंत्र सुनाया, उसके बाद मंत्र लिखा हुआ पेपर दिया और कहा ''इसे मन-ही-मन जपो और 15 मिनट मेरा ध्यान करो।''

मैंने सोचा कहीं मंत्र भूल न जाऊँ इसलिए मैंने मन ही मन जपना शुरू कर दिया और आँखें बंद करके गुरुदेव का ध्यान शुरू किया, इतने में आस-पास में लोगों की आवाजें आने लगी। मैं घबरा गया कि यह क्या हो गया है ? मैंने आँखें खोलने की कोशिश की लेकिन आँखें खुली नहीं। मैंने सोचा आज गुरुदेव कुछ कर देंगे। **फिर ललाट पर नीली, लाल, पीली रोशनी दिखाई दी और अंदर से आनन्द आने लगा जिसकी व्याख्या शब्दों में नहीं कर सकता हूँ।** मुझे पहले जो भय लगता था, वह अपने आप समाप्त हो गया। उसी समय ध्याान खुलते ही एक नयापन महसूस हुआ। आगे क्या लिखूँ मंत्र की स्पीड इतनी तेज हो गई कि सिर में हवाई जहाज जैसी आवाज सुनाई देने लगी और दिव्य गंध आना, बहुत अनुभव हुए, इतने अनुभव हुए कि उनको लिख पाना असंभव है।

परम दयालू सद्गुरुदेव भगवान् ने ऐसी करूण कृपा की, जिसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। मुझे पार्थिव अमरत्व का आनंद प्रदान कर दिया।

अतः मैं सभी को यही कहना चाहता हूँ कि ईमानदारी से आप गुरुदेव के दिये हुए संजीवनी मंत्र का सघन जप और 15-15 मिनट सुबह-शाम ध्यान करें, आपको सच्चाई समझ में आ जायेगी। यह साधक के ऊपर है कि साधना के प्रति वह कितना गम्भीर है।

सत्य का ज्ञान अंदर से होता है।

''जय सद्गुरुदेव''

-केनाराम चौधरी

टीकमगढ़, आगोलाई,

जिला-जोधपुर(राज़)

www.the-comforter.org

विद्यार्थियों को दी ध्यान व सिद्धयोग की जानकारी

भोपालगढ़, 6 फरवरी। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की ओर से भोपालगढ़ क्षेत्र के राज. उच्च माध्यमिक विद्यालय कूड़ी, हीरादेशर व नाड़सर में गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की तस्वीर व उनकी आवाज में संजीवनी मंत्र सुनाकर विद्यार्थियों को ध्यान करवाया गया।

साधक गणेशाराम जाखड़ व भींयाराम चौयल ने बताया कि गुरुदेव सियाग की तस्वीर का ध्यान करने व उनके द्वारा बताये गये संजीवनी मंत्र का जाप करने से साधक के शरीर में कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तथा ध्यान अवस्था में स्वतः यौगिक क्रियाएँ होती हैं, जिससे सभी प्रकार की असाध्य बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं तथा सभी प्रकार के नशे छूट जाते हैं। विद्यार्थियों की एकाग्रता व स्मरण शक्ति का विकास होता है तथा ध्यान के अभ्यास से परीक्षा का डर समाप्त हो जाता है। आज के ध्यान कार्यक्रम में कई विद्यार्थियों को ध्यान में सफेद, नीला प्रकाश दिखाई दिया तथा शरीर में कम्पन व यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लग गई। विद्यार्थियों ने शांति का अनुभव किया। विद्यार्थियों के प्रधानाचार्य जी ने इसे विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने व विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का कारगर उपाय बताया।

www.the-comforter.org

पेट व सांस की तकलीफ ठीक हुई

परम पूज्य समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग व बाबा श्री गंगाईनाथ जी महायोगी ब्रह्मलीन के पावन चरण कमलों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ, जिनकी करूण कृपा से जीवन में आनंद और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हुआ।

कुछ वर्ष पूर्व अचानक मेरी तबियत खराब हो गई। मेरा सांस रुकने लगा। नींद के समय कभी कभी ज्यादा ही सांस रुक जाता था। इसके बाद पेट में गैस बनने की समस्या हो गई। इस समस्या के समाधान के लिए एक डॉक्टर को दिखा कर, पाँच साल तक गोली-दवाई लेता रहा। जब कोई विशेष फायदा नहीं हुआ तो किसी के कहने पर, गुजरात के पालनपुर शहर में एक अस्पताल में दिखाया। डॉक्टर ने सभी प्रकार की जाँचें कर, दवाई दी और कहा कि ये दवाईयाँ लेते रहो, ठीक हो जाओगे। मैं कुछ महिनों तक डॉक्टर बताये परहेज और विधि अनुसार दवाईयों लेता रहा लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। जीवन में निराशा घर कर चुकी थी कि अब क्या किया जाए? अंदर से बहुत परेशान था।

एक दिन सड़क किनारे कोई सिद्धयोग दर्शन का प्रचार कर रहा था। मैंने उनसे माँग कर सिद्धयोग को पेपर और कार्ड ले लिया। मैंने कार्ड में लिखी विधि के अनुसार ध्यान शुरू किया, फिर कुछ समय बाद जोधपुर आश्रम आकर गुरुदेव से दीक्षा ले ली। मंत्र जप और ध्यान से नशा आने लगा। उसके बाद मैं सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान करता रहा। उसका परिणाम यह हुआ कि मैं पूर्णतः स्वस्थ हो गया।

ऐसे परम गुरुदेव को बारंबार प्रणाम करता हूँ।

-दुर्जाराम मेघवाल
गाँप/पोस्ट-मूलाना
जिला-जैसलमेर

सिद्धयोग में वर्णित संजीवनी मंत्र से रोगों का ठीक होना

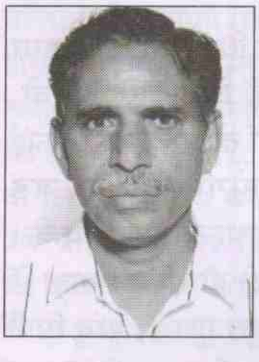

परम पूज्य सद्‌गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग एवं बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी के चरण कमलों में, मैं कोटि-कोटि नमन् करता हूँ।

मैंने 1991 में सोयाबीन का दूध पी लिया, जिससे मुझे मसा(बवासीर) की बीमारी हो गई। मैं जब 2-3 वर्ष का था तब गुप्त रोग हो गया। गुप्त रोग को ठीक करने के लिये मेरे पिता ने पेट, हाथ, पांव पर लोहे के डाम लगवा दिये जिससे मुझे गोला, पेचुटी की तकलीफ हो गई।

इन दोनों बीमारियों से मेरा शरीर बहुत कमजोर हो गया था, इस कारण मुझे दिन में 10-15 बार शौच जाना पड़ता था। दिन में कई बार लघु शंका के लिए जाना पड़ता था। फिर मैंने डॉक्टर को बताया तो डॉक्टर ने कहा कि यह संगृहणी बीमारी है, कई प्रकार की दवाई ली मगर ठीक नहीं हुआ।

2004 में दवाई लेने के लिये गोकुल जी की प्याऊ गया तो दुकान पर लगे एक पेम्पलेट पर भगत की कोठी जोधपुर के कैंसर रोगी के ठीक होने के बारे में लिखा था। इस पेम्पलेट को पढ़कर मेरी भी गुरुदेव के पास जाने की इच्छा हुई। मैं आश्रम जानता नहीं था, मगर 2004 में रात को साइकिल पर लोगों को पूछता हुआ आश्रम पहुँच गया। आश्रम में एक गुरुभाई श्री सांगाराम जी मिले थे। उन्होंने कहा कि गुरुदेव तो अमेरिका गये हुए हैं। फिर उन्होंने सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर, मुझे ध्यान करने का तरीका बताया। उसके बाद मैंने नियमित रूप से ध्यान करना शुरू कर दिया।

> **सद्‌गुरुदेव की असीम कृपा से कुण्डलिनी जनित योग से, जीवन बदल गया। कई रोगों से मुक्त हो गया। मनुष्य जीवन की सार्थकता समझ में आ गई।**

एक दिन मैं सिटी बस से घर जा रहा था तो बस में गुरुदेव की फोटो लगी हुई थी। मैंने बस ड्राईवर श्री भागीरथ जी परिहार को पूछा तो उन्होंने कहा कि ''मैं भी गुरुदेव से दीक्षित हूँ।'' उस समय गुरुदेव ने दीक्षा पर रोक लगा रखी थी। कुछ समय बाद मैंने 13 अप्रेल 2006 को बीकानेर जाकर मंत्र दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद मैं सुबह-शाम संजीवनी मंत्र जप के साथ ध्यान करने लगा। ध्यान करने पर तकलीफ ज्यादा होने लगी तो मैंने गुरुदेव से कहा कि मुझे ज्यादा तकलीफ हो रही है तो गुरुदेव ने कहा ''बेटा ध्यान करने से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है इसलिए ध्यान थोड़ा कम कर, मगर मंत्र जप करता रह।'' फिर गुरुदेव स्वयं ने मुझे खाने के लिए लोंग दिये, लोंग खाने के बाद मेरे में ताकत आने लगी। जब मैं सुबह-शाम ध्यान करता हूँ तो मेरे शरीर में कई प्रकार की यौगिक क्रियाएँ स्वत: होती है और मुझे खेचरी मुद्रा भी लगती है।

14 मार्च 2018 को मेरे परिवार में एक ऐसी घटना घट गई। मैं स्कूल में पढ़ा रहा था कि बोलेरो गाड़ी से छह आदमी आए और मुझे गाड़ी में बैठाकर, सुनशान जगह पर ले गये। एक आदमी ने गाड़ी का दरवाजा खोला और मेरा कमीज खींच कर गाड़ी से बाहर लाया। वह आदमी कहने लगा कि ''इसके टांगे तोड़ दो'' मगर गुरुदेव की कृपा से वह मेरे पर हाथ तक नहीं उठा पाया, क्योंकि साक्षात् परम्पूज्य गुरुदेव मेरे साथ थे। ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास हो गया।

मेरे जीवन में हर पल गुरुदेव साथ में रहते हैं, ऐसा मुझे आभास होता है। मैं पहले आर्थिक रूप से भी कमजोर था लेकिन गुरुदेव की आराधना करने के बाद मेरा आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही तरह से विकास हुआ है।

सद्‌गुरुदेव के पावन चरण कमलों में कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ।

-गजेसिंह टाक,
-टाकों का वास,
मगरा पूँजला, जोधपुर

www.the-comforter.org

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

यहाँ भी यह कल्पना अवगत है कि वनस्पति और पशु प्रकृति के प्राणी-रूप सोपान के निचले डंडे हैं और मनुष्य सचेतन सत्ता का अंतिम या विकास का चरम बिंदु है।

यह ऐसा रूप है जिसमें अंतरात्मा को मन, प्राण और शरीर में से आध्यात्मिक प्रयोजन और आध्यात्मिक परिणाम पाने में समर्थ होने के लिये निवास करना पड़ता है। वस्तुतः यह सामान्य कल्पना है और यह बुद्धि और अंतर्भास दोनों को इतने जोर से जंच जाती है कि इस पर बहस करने की जरूरत नहीं रहती-निष्कर्ष लगभग अनिवार्य है।

हमें प्रगतिशील विकास की प्रक्रिया की इस पृष्ठभूमि में मनुष्य, उसके मूल, उसके पहले प्रादुर्भाव और अभिव्यक्ति में उसकी स्थिति को देखना चाहिये। यहाँ दो संभावनाएँ हैं; या तो मानव शरीर और चेतना का पार्थिव प्रकृति में अचानक आविर्भाव हुआ, जड़-भौतिक जगत् में आकस्मिक सृजन या तार्किक मन की स्वतंत्र, स्वचालित अभिव्यक्ति हुई।

जो पहले के इसी जैसे अवचेतन जीव-रूपों और जड़ में सजीव चेतना की अभिव्यक्ति में हस्तक्षेप कर रही थी या फिर पाशविक सत्ता में से मानवता का विकास हुआ, शायद वह अपनी तैयारी और विकास की अवस्थाओं में मन्द थी, परंतु संक्रमण के निर्णायक स्थलों पर परिवर्तन सबल छलांगें मारने लगा।

पिछली परिकल्पना में कोई कठिनाई नहीं आती क्योंकि यह निश्चित है। यद्यपि मौलिक प्ररूप में तो नहीं लेकिन प्ररूप के अंदर की विशिष्टताओं में परिवर्तन जाति और उपजाति में लाये जा सकते हैं और वस्तुतः स्वयं मनुष्य अपने आप यह कर चुका है और आश्चर्यजनक रूप से उसकी संभावनाओं को छोटे पैमाने पर परीक्षणात्मक विज्ञान द्वारा संपादित कर रहा है।

यह भली-भांति माना जा सकता है कि प्रकृति में गुप्त रूप से सचेतन ऊर्जा इस प्रकार की क्रियाओं को बड़े पैमाने पर ला सकती है और बहुत सारे निर्णायक और महत्त्वपूर्ण विकास अपनी सृजनात्मक परंपराओं के द्वारा ला सकती है। सामान्य पशु-जीवन से मानवीय प्रकार के जीवन में बदलने के लिये जरूरी शर्त होगी, एक ऐसे भौतिक संगठन का विकास जो तेज प्रगति की, चेतना के विपर्यय या उलट जाने की, नयी ऊँचाइयों तक पहुँचने और वहाँ से निचले स्तरों पर नजर डालने की क्षमता दे।

क्षमता का ऐसा उन्नयन और विस्तार जो सत्ता को इस योग्य बना दे कि वह पुरानी पाशविक क्षमताओं को महत्तर और अधिक नमनीय मानव बुद्धि के साथ ले ले, और साथ ही या बाद में सत्ता के नये प्ररूप के उपयुक्त अधिक बड़ी और सूक्ष्म शक्तियों को, तर्क, चिन्तन, जटिल अवलोकन, व्यवस्थित अन्वेषण, विचार और खोज की शक्तियों को विकसित करे। अगर कोई उभरती हुई चित्-शक्ति है तो, यदि यंत्र प्राप्त हों तो, संक्रमण में कोई कठिनाई न होगी-सिवाय जड़ निश्चेतना की बाधा और प्रतिरोध के।

पशु में पहले ही सीमित मात्रा में मिलते-जुलते कुछ गुण हैं, परंतु सिर्फ क्रिया के लिये और उनका संगठन प्रारंभिक, सरल और अनगढ़ रहता है, उनका क्षेत्र और उनकी नमनीयता बहुत निचले स्तर की होती है, क्षमता पर उसका अधिकार संकीर्ण और अनियमित रहता है।

लेकिन विशेष रूप से इन क्षमताओं की क्रिया अधिकतर यांत्रिक और कम आयोजित है। उस पर प्रकृति-ऊर्जा के यांत्रिक स्वभाव की छाप होती है, जो आरंभिक चेतना की क्रियाओं का संचालन करती है, उस तरह नहीं जैसे मनुष्य की सचेतन ऊर्जा अपनी क्रियाओं का अवलोकन करती और एक बड़ी हद तक निदेशन और नियंत्रण करती है और सोच समझ कर बदलती या संशोधित करती है।

चेतना की दूसरी पाशविक आदतें मौलिक रूप से मनुष्य की आदतों से भिन्न नहीं हैं। उसे बस इतना ही करना पड़ा कि उसने उन्हें एक उच्चतर मानसिक स्तर पर विकसित और वर्धित किया और जहाँ कहीं संभव हुआ उन्हें मानस भावापन्न, परिमार्जित और सूक्ष्म बनाया।

❖❖❖

www.the-comforter.org

दिव्य प्रेम

(अप्रैल 12, 1900 को सैन फ्रान्सिस्को क्षेत्र में दिया गया भाषण) विवेकानन्द साहित्य-भाग 3)

प्रेम स्वयं अनादि, अनन्त बलिदान है। तुमको सब कुछ छोड़ देना होगा। तुम किसी वस्तु को अपना नहीं सकते। प्रेम को पाकर किसी दूसरी वस्तु की इच्छा नहीं होगी।... **'केवल तू सदा के लिए मेरा प्रिय बन !'** यह है, जो प्रेम चाहता है। **मेरे प्रिय, उन अधरों का एक चुम्बन !** (उसके लिए) जो तेरे द्वारा चुम्बित हो गया है, सब दुःख मिट जाते हैं। एक बार तुझसे चुम्बित होने पर मनुष्य सुखी हो जाता है और अन्य सब वस्तुओं के प्रेम को भूल जाता है।

वह केवल तेरे गुण गाता है और केवल तेरे दर्शन करता है। मानव-प्रेम की-प्रकृति में भी (दैवी तत्त्व उपस्थित होते हैं।) तीव्र प्रेम के आरम्भिक क्षण (में) समस्त संसार तुम्हारे हृदय के साथ स्वर मिलाता ज्ञात होता है। ब्रह्मांड के सब पक्षी तुम्हारे प्रेम के गीत गाते हैं; फूल तुम्हारे लिए खिलते हैं। यह स्वयं अनन्त नित्य प्रेम है, जिसमें से (मानव) प्रेम आता है।

ईश्वर का प्रेमी किसी से-लुटेरों से, कष्ट से, अपने जीवन के भय से भी क्यों डरे ? प्रेमी घोर नरक में जा सकता है, पर क्या वह नरक रहेगा ? हम सबको स्वर्ग और नरक के ये विचार छोड़ने होंगे और ऊँचा (प्रेम) प्राप्त करना होगा।... सैकड़ों, प्रेम के इस पागलपन की खोज में हैं, जिसके सामने ईश्वर के अतिरिक्त शेष सब समाप्त हो जाता है ।

अंत में, प्रेम, प्रेमी और प्रेम-पात्र एक हो जाते हैं। यही लक्ष्य है।... आत्मा और मनुष्य के बीच, जीवात्मा और ईश्वर के बीच यह बिलगाव क्यों है ?... केवल प्रेम का यह आनन्द लेने के लिए। वह अपने से प्रेम करना चाहता था, इसलिए उसने अपने को अनेक में विभाजित किया।...''सृष्टि का सम्पूर्ण कारण यही है,'' प्रेमी कहता है। ''हम सब एक हैं। 'मैं और मेरे पिता एक हैं।' अभी मैं ईश्वर से प्रेम करने के लिए अलग हो गया हूँ।.. अच्छा क्या है ? मीठा खाना या मीठा बन जाना ? मीठा बन जाना, उसमें क्या मजा है ? मीठा खाना-उसमें प्रेम का अमिट आनन्द है।''

प्रेम के सब आदर्श-(ईश्वर हमारे पिता, माता, मित्र और संतान के रूप

सैकड़ों, प्रेम के इस पागलपन की खोज में हैं, जिसके सामने (ईश्वर के अतिरिक्त) शेष सब (समाप्त हो जाता है ।)

अंत में, प्रेम, प्रेमी और प्रेम-पात्र एक हो जाते हैं। यही लक्ष्य है।..

में)-इस दृष्टि से बनाये गये हैं कि हमारे भीतर भक्ति की शक्ति उत्पन्न हो और हम ईश्वर को निकटतर और प्रियतर अनुभव करें। **गहनतम प्रेम वह है, जो नर और नारी के बीच होता है। ईश्वर को उसी तरह के प्रेम से प्रेम करना चाहिए।** नारी अपने पिता से प्रेम करती है, अपनी माता से प्रेम करती है, अपनी संतान से प्रेम करती है, अपने मित्र से प्रेम करती है, पर वह अपने आपको पूर्ण रूपेण न पिता के प्रति, न माता के प्रति, न संतान के प्रति, न मित्र के प्रति प्रकट कर सकती है। केवल एक व्यक्ति है, जिससे वह कुछ नहीं छुपाती। यही बात पुरुण के साथ है ।... (पति)-पत्नी-संबंध सब प्रकार पूर्ण संबंध है। नर-नारी-संबंध में शेष सब प्रेम एक स्थान पर केन्द्रित (हो जाते हैं)। पति में नारी को पिता, मित्र, संतान मिलती है। पत्नी में पति को माता, पुत्री तथा कुछ और मिलता है। नर-नारी का यह महत् रूप से पूर्ण प्रेम (ईश्वर के लिए) आना चाहिए वही प्रेम, जिससे एक नारी बिना किसी रक्त-संबंध के-पूर्णतया, निर्भीकता से और लज्जारहित होकर पुरुष के प्रति अपने को दे देती है।

अंधकार नहीं ! जिसे वह अपने से नहीं छुपाती, उसे वह अपने प्रेमी से भी नहीं छुपाती। वही प्रेम (ईश्वर के लिए) आना चाहिए। ये बातें समझने में कठिन और दुष्कर हैं। तुम धीरे धीरे उन्हें समझने लगोगे, और सारे यौन भाव जाते रहेंगे। 'गरमी के दिनों में नदी-तट की रेत में जो स्थिति पानी के बूंद की होती है, वैसी ही स्थिति इस जीवन और इसके सब संबधों की है। ये सब विचार (जैसे कि) **'वह स्रष्टा है,'** बच्चों के लिए उपयुक्त हैं। वह मेरा प्रिय है, स्वयं मेरा जीवन है-यह होनी चाहिए मेरे हृदय की पुकार !...

'मुझे एक आशा है। वे तुझे संसार का स्वामी कहते हैं, और....भला हूँ या बुरा, बड़ा हूँ या छोटा-मैं इस संसार का ही अंश हूँ और तू मेरा प्रिय भी है। मेरा तन, मेरा मन और मेरी आत्मा सब इस वेदी पर हैं। प्रिय, इन भेंटों को अस्वीकार न कर ।

समाप्त

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

आत्मा का साकार न हो सकना अथवा अन्नमय या मनोमय रूप के साथ सम्बन्ध जोड़ने और परिच्छिन्न स्वभाव या शरीर धारण करने से घृणा करना तो दूर रहा, यहाँ तो जो कुछ है वही है, उसी सम्बन्ध से, उसी परिच्छिन्न स्वभाव और शरीर को धारण करने से ही इस जगत् का अस्तित्व है। जगत् का यंत्रवत् चलने वाला विधान-मात्र होना तो दूर रहा, जिसकी शक्तियों की गति में या जिसके मन-प्राण-शरीर से होने वाले कर्मों में हस्तक्षेप करनेवाला कोई आत्मा या पुरुष नहीं है, है केवल कोई आदि तटस्थ आत्म तत्त्व की सत्ता, जो इस जगत् में नहीं, इसके बाहर या ऊपर कहीं निष्क्रिय रूप से रहती है।

यह सारा जगत् और इसका प्रत्येक अणु-रेणु ही कर्मरत भागवत शक्ति है और इसकी प्रत्येक गति का निर्धारण और नियमन उसी भागवत शक्ति के द्वारा होता है, इसके प्रत्येक रूप में उसी का निवास है, प्रत्येक जीव और उसका अंतःकरण उसी का है; सब कुछ ईश्वर में है और उसी में सब कुछ होता रहता है, सब में वही है, वही कर्म करता और अपनी सत्ता दर्शाता है; **प्रत्येक प्राणी छद्मवेश में नारायण ही है।**

अजन्मा, जन्म नहीं ले सकता। यह बात तो दूर रही, यहाँ तो प्रत्येक जीव अपने व्यक्तित्व के अन्दर रहते हुए भी वही अजन्मा आत्मा है, वही सनातन है। जिसका न कोई आदि है न अंत। और अपने मूल अस्तित्व और अपनी विश्व व्यापकता में सभी जीव वही एक अजन्मा आत्मा है, जिसके आकार-ग्रहण और आकार-परिवर्तन का नाम ही जन्म और मृत्यु है। इस जगत् का सारा रहस्यमय व्यापार यही तो है कि अपूर्णता को पूर्ण कैसे धारण किए हुए है?

पर यह अपूर्णता धारण किए गये मन और शरीर के रूप और कर्म में ही प्रकट होती है, यहाँ के बाह्य जगत् में ही रहती है; जो इसे धारण करता है, उसमें कोई अपूर्णता नहीं होती; जैसे सूर्य, जो सबको आलोकित करता है, उसमें प्रकाश या दर्शन-शक्ति की कोई कमी नहीं होती, कमी होती है व्यक्ति

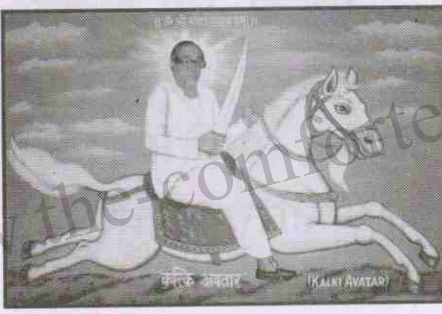

-विशेष की दर्शनेंद्रिय की क्षमता में। फिर, यह भी नहीं है कि भगवान् बहुत दूर किसी स्वर्ग में विराजे इस जगत् का राज करते हों, बल्कि उनका राज तो उनकी अपनी निगूढ़ सर्वव्यापकता से हुआ करता है; प्रत्येक परिच्छिन्न सांत गुणकर्म अपरिच्छिन्न अनन्त शक्ति का ही एक कार्य है, किसी पृथक परिच्छिन्न स्वयंभू क्रिया-शक्ति का नहीं, जो अपने ही बल से कोई परिश्रम कर रही हो; मन-बुद्धि के संकल्प और ज्ञानी की प्रत्येक परिच्छिन्न क्रिया में हम अपरिच्छिन्न अखिल संकल्प और अखिल ज्ञान के किसी कर्म का आश्रय रूप से होना ढूंढ़कर देख सकते हैं।

भगवान् का राज ऐसा राज नहीं है, जहाँ का शासक अनुपस्थित रहता हो, विदेशी हो या बाहरी हो; वे इसलिए सबका शासन करते हैं कि वे सबका अतिक्रमण करते हैं, साथ ही इसलिए भी कि वे सब क्रियाओं में स्वयं रहते हैं और वे ही उन क्रियाओं के एकमात्र प्राण और आत्मा हैं। इसलिए अवतार की सम्भावना के विरुद्ध जो-जो आक्षेप हमारी तर्क-बुद्धि में आया करते हैं वे सिद्धान्ततः टिक नहीं सकते क्योंकि यह सब हमारे बौद्धिक तर्क द्वारा उपस्थित किया हुआ एक ऐसा व्यर्थ का विभेद है जिसे जगत् का सारा व्यापार और उसकी सारी वास्तविकता दोनों ही प्रतिक्षण खंडित और अप्रमाणित कर रहे हैं।

परन्तु अवतार की सम्भावना के प्रश्न को छोड़कर, एक और प्रश्न है और वह यह है कि क्या भगवान् सचमुच इस प्रकार कर्म करते हैं, क्या सचमुच भागवत चेतना परदे से बाहर निकलकर इस सांत, मनोमय, अन्नमय, परिच्छिन्न, अपूर्ण बाह्य जगत् में सीधे कर्म करती है? यह सांत बाह्य परिच्छिन्न रूप आखिर क्या है?. ...यह अनन्त के ही विभिन्न चिद्भावों के सामने अनन्त की अपनी अभिव्यक्तियों का एक सुनिश्चित बाह्य रूप, उनका एक बाहरी मूल्य है; प्रत्येक सांत बाह्य रूप का वास्तविक मूल्य तो यह है कि वह बाह्य प्रकृति के कर्म और सांसारिक आत्म-अभिव्यक्ति में चाहे जैसा हो, पर अपनी बाह्य आत्म-सत्ता में अनन्त ही है।

क्रमशः अगले अंक में...

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित 'गीता प्रबंध' पुस्तक से

www.the-comforter.org

समता

''समता के बिना साधना में सुदृढ़ प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी अप्रिय हों, दूसरों का व्यवहार चाहे जितना भी नापसंद हो, तुम्हें पूर्ण स्थिरता के साथ तथा किसी प्रकार की क्षोभ उत्पन्न करनेवाली प्रतिक्रिया के बिना उन्हें ग्रहण करना सीखना चाहिये। इन्हीं चीजों से समता की परीक्षा होती है।

जब सब कुछ अच्छी तरह से चलता रहता है और सभी मनुष्य तथा परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं तब तो स्थिर और सम बने रहना सहज होता है; परन्तु जब वे सब विपरीत हो जाते हैं तभी उन्हें दृढ़तर और पूर्णतर बनाया जा सकता है।''

महर्षि श्री अरविन्द

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान का प्रत्यक्ष परिणाम

भारतीय योगदर्शन, मनुष्य को विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाने के साथ-साथ मोक्ष भी देता है। यह योग मनुष्य को सभी प्रकार के रोगों से पूर्ण रूप से मुक्त करता है। रोगों से मुक्त हुए बिना शांति नहीं, और पूर्ण शांति के बिना मोक्ष असम्भव है। **कुण्डलिनी के जाग्रत होते ही साधक को इन्द्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की निरन्तर प्रत्यक्षानुभूति होती है।**

जिससे साधक का मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शांत हो जाता है तथा उसके कारण उत्पन्न कई असाध्य रोग जैसे उन्माद, पागलपन, रक्तचाप, अनिद्रा आदि अनेक बीमारियाँ बिना दवा के चन्द दिनों में स्वतः ही ठीक हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त सभी शारीरिक रोग विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ करवाकर वह जगत् जननी(कुण्डलिनी) पूर्णरूप से ठीक कर देती है।

उस आंतरिक चेतना शक्ति के ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। ज्ञान की तो उसमें **''पराकाष्ठा''** है। अतः उसके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। दिव्य आनन्द के निरन्तर बने रहने के कारण, सभी प्रकार के नशों से पूर्णरूप से मुक्ति मिल जाती है। मेरे कई साधक अफीम, शराब, भांग, गांजा आदि नशों से बुरी तरह से ग्रसित थे। दीक्षा के बाद चन्द दिनों में ही उन्हें बिना किसी प्रकार के कष्ट के, सभी नशों से पूर्ण मुक्ति मिल गई।

ऐसे अनेक मनोरोगी शक्तिपात के कारण पूर्णरूप से ठीक हो गये, जिन्हें विद्युत चिकित्सा और इन्सुलीन चिकित्सा से भी लाभ नहीं हुआ था। आज सभी बिना दवा खाये पूर्णरूप से स्वस्थ हैं, और ईश्वर का भजन करके सात्विक जीवन जी रहे हैं।

इस प्रकार सभी प्रकार के मनोरोगों, शारीरिक रोगों और सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार का कष्ट पाये और बिना दवा के, **पूर्ण रूप से मुक्ति पाने का, हमारे अध्यात्म विज्ञान में ठोस आधार है।** यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। उपर्युक्त सभी लाभ किसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया से नहीं, अध्यात्म विज्ञान के ठोस सिद्धांतों से मिलते हैं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

मैं हीने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा, मैंने यह विचार बाँधा है और उसे सुफल भी करूँगा।

उपरोक्त भविष्यवाणी को दोहराते हुए यीशु ने कहा है — जॉहन 15:26 "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।"

जॉहन 16:7 "तौभी मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।"

मैथ्यु 24:27 "क्योंकि जैसे बिजली "पूर्व" से निकलकर "पश्चिम" तक चमकती जाती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।"

यीशु अपने जीवनकाल में उस सहायक के प्रकट होने का सही समय नहीं बता सका। वह यही ~~कहता~~ कहता रहा कि — "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।"

परन्तु मृत्यु के बाद यीशु की आत्मा ने 40वें दिन स्वर्गारोहण से पूर्व जो भविष्यवाणी की थी वह बहुत ही रहस्य पूर्ण है। उसका वर्णन प्रेरितों के कार्य के 1:5 में इस प्रकार है — "क्योंकि जॉहन ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े "दिनों" के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।" क्योंकि हिन्दी अनुवाद सही चित्र नहीं प्रस्तुत करता, इसलिए उस सहायक के प्रकट होने का समय जानने के लिए हमें मूलभाषा का सहारा लेना पड़ेगा जो इस प्रकार है —

"For John truly baptized with water, but ye shall be baptized with the Holy Ghost not many days hence." इसमें उस सहायक के प्रकट होकर पवित्रात्मा से बपतिस्मा देने का समय मालूम करने के लिए

www.the-comforter.org

क्रमशः अगले अंक में...

आध्यात्मिक जीवन और ध्यान

ध्यान में बिताये गये घण्टे, आध्यात्मिक प्रगति का प्रमाण नहीं है। आध्यात्मिक प्रगति का प्रामाण तो तब होगा, जब यह अवस्था आ जाये कि ध्यान करने के लिए तुम्हें किसी प्रकार का प्रयास ही न करना पड़े। ध्यान को रोकने के लिए भले ही प्रयास की आवश्यकता हो। तब ऐसी अवस्था हो जाती है कि ध्यान को रोकना कठिन हो जाता है। भगवान् के चिन्तन को रोकना, साधारण चेतना के नीचे उतरना कठिन हो जाता है।

जब भगवान् में एकाग्रता तुम्हारे जीवन की परम आवश्यकता बन जाये, जब तुम उसके बिना रह ही न सको, तुम चाहे किसी काम में क्यों न लगे रहो, जब वह अवस्था स्वाभाविक रूप से रात-दिन बनी रहे-- समझना चाहिये कि निश्चित रूप से तुम्हारी प्रगति हुई है, तुमने वास्तविक उन्नति की है। चाहे तुम ध्यान लगा कर बैठो या घूमो-फिरो और काम-काज करो, जिस बात की तुमसे अपेक्षा की जाती है, वह है चेतना। यही एकमात्र आवश्यकता हैं- भगवान् के बारे में सदा-सर्वदा सचेतन रहना।

-'श्री मातृवाणी', खण्ड 3, पृ.24

चैतन्य मंत्र

चैतन्य मंत्र एक ऐसे गुरु से मिलता है जिन्होंने स्वयं उस मंत्र को अपने गुरु से पाया हो और इसकी शक्ति को अपने में पूर्ण विकसित कर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया हो। इसके पीछे गुरु के आत्मज्ञान की पूरी शक्ति होती है। और यह साधक में तुरन्त कार्य प्रारम्भ कर देता है। जब शिष्य, मंत्र जप करता है तो उसकी सुप्त शक्ति जाग्रत हो जाती है और उसके अन्तःकरण में नवजीवन का निर्माण होता है।

विभिन्न शिक्षकों और पुस्तकों से सात करोड़ मंत्र प्राप्त किये जा सकते है फिर भी यदि एक साधक को ऐसा मंत्र चाहिए जो उसको रूपान्तरित कर दे तो उसे ''चैतन्य मंत्र'' प्राप्त करना आवश्यक है, ऐसा मंत्र जो चित्ति शक्ति से अनुप्राणित हो। चैतन्यमंत्र एक ऐसे गुरु से मिलता है जिन्होंने स्वयं उस मंत्र को अपने गुरु से पाया हो और इसकी शक्ति को अपने में पूर्ण विकसित कर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया हो। इसके पीछे गुरु के आत्मज्ञान की पूरी शक्ति होती है। और यह साधक में तुरन्त कार्य प्रारम्भ कर देता है। जब शिष्य मंत्र जप करता है तो उसकी सुप्त शक्ति जाग्रत हो जाती है और उसके अन्तःकरण में नवजीवन का निर्माण होताहै।

नाद विज्ञान
(वाणी के चार स्तर) एवं शब्दों का उद्भव

मंत्र का विज्ञान अतीव महान् है क्योंकि मंत्र वह सीढ़ी है जिससे हम निराकार चित्ति तक पहुँचते हैं। मंत्र शास्त्रों के अनुसार मनुष्य में वाणी चार अलग-अलग स्तरों पर क्रियाशील होती है। अधिकांश लोग वाणी का संबंध स्थूल स्तर से ही जोड़ते हैं जिसे **'वैखरी वाणी'** कहते हैं। यह वह स्तर है, जहाँ से हम बोलते हैं। लेकिन सत्य यह है कि जिहवा अपने आप नहीं बोलती। स्थूल स्वर एक अन्य सूक्ष्म स्तर से उठते है, जिसे **'मध्यमा'** कहते हैं। जिसका अनुभव कण्ठ में होता है। इस सूक्ष्म स्तर के नीचे एक और गहरा स्तर होता जिसे **'पश्यन्ती'** कहते हैं। यह वाणी का कारण स्तर है। जिसका अनुभव हृदय में होताहै। किन्तु ध्वनि का उद्गम और गहराई में है और यह है वाणी से अनुभवातीत स्तर पर। इसका अनुभव नाभि स्थान में किया जाता है और यह **''परावाणी''** कहेलाता है।

मंत्र का अवतरण

मंत्र में ध्वनि के इन स्थूल व सूक्ष्म स्तरों को भेदकर हमारे भेदभाव को नष्ट कर, हमें अपने स्रोत तक वापस ले जाने की शक्ति है। जब हम इसका जप करते हैं तो यह स्थूल स्तर से सूक्ष्मतर स्तरों तक जाता है और अंत में शुद्ध चित्ति तक पहुँच जाता है, जहाँ से इसका उद्भव हुआ है।

प्रारम्भ में हम जिहवा स्तर पर मंत्र जप करते हैं। तथा कुछ समय पश्चात् वह थोड़ा गहराई में कण्ठ में **'मध्यमा'** के स्तर पर जाता है। इस स्तर पर एक बार किया गया जप, स्थूल जिहवा से किये गये सहस्रों जपों के बराबर होता है।

कंठ स्थान से मंत्र हृदय में **'पश्यन्ती'** के स्तर पर आता है। जहाँ उसके स्पन्दन और भी शक्तिशाली हो जाते हैं। इस केन्द्र में एक बार जपा गया मंत्र, कण्ठ स्थान पर किए गए सहस्रों जप के बराबर होता है।

जब पश्यन्ती के स्तर पर मंत्र जप चलता है तो आनन्द की लहरें हमें घेर लेती है और हमें असाधारण शक्तियाँ प्राप्त हो जाती है।

अतं में मंत्र हृदय स्थान से नाभि के स्थान में चला जाता वाणी का **''परावाणी''** स्तर जहाँ आत्मा का स्पर्श करता है। तब मंत्र सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त हो जाता है। और हमें परम सत्य का अनुभव होता है। इस प्रकार हमें मंत्र शक्ति की प्राप्ति होती है।

जब योगी एक बार मंत्र की शक्ति को समझ लेता है व मंत्र को आत्मा का स्पर्श करा लेता है तब उसके प्रत्येक शब्द में आत्मा की शक्ति व्याप्त हो जाती है। और उन शब्दों का अचूक प्रभाव होता है। उसके मुख से जो भी शब्द निकलता है वह **''परावाणी''** चित्ति के स्थान से है। इस कारण वह जो भी शब्द बोलता है, वह मंत्र ही होता है और सदा फलदायी होता है।

संकलनकर्ता-
सांगाराम सारण
गाँव-कलाऊ तहसील-शेरगढ़
जिला-जोधपुर

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो ? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार।

www.the-comforter.org

प्रबल पक्ष की शक्ति पराजित या विनष्ट ?

अगर हम ऐतिहासिक दृष्टांतों की परीक्षा कर देखें तो मालूम होगा कि आध्यात्मिक शक्ति ही बाहुबल को तुच्छ कर मानवजाति को यह बतलाती है कि यह जगत् भगवान् का राज्य है, अंध स्थूल प्रकृति का लीलाक्षेत्र नहीं। शुद्ध आत्मा है शक्ति का मूल स्रोत , जो आद्यप्रकृति आकाश में असंख्य सूर्यों को घुमाया करती है, अंगुलीस्पर्श द्वारा पृथ्वी को हिलाकर मानवसृष्ट अतीत के गौरव-चिह्नों को ध्वंस करती है, वह आद्यप्रकृति है शुद्ध आत्मा के अधीन।

वह प्रकृति असंभव को संभव करती है, मूक को वाचाल, पंगु को गिरि-लंघन की शक्ति देती है। सारा जगत् है, उस शक्ति की सृष्टि। जिसकी आध्यात्मिक शक्ति विकसित होती है उसकी विजय के उपकरण स्वयं ही उत्पन्न हो जाते हैं। बाधा-विपत्तियाँ स्वयं ही दूर हो, अनुकूल अवस्था ले आती हैं। कार्य करने की क्षमता स्वयं ही प्रस्फुटित हो, तेजस्विनी और क्षिप्र गतिवाली होती है।

यूरोप आजकल इस आत्मशक्ति(Soul Force) का आविष्कार कर रहा है, अभी भी उसमें उसका पूर्ण विश्वास नहीं, उसके भरोसे कार्य करने की प्रवृत्ति उसमें नहीं। किन्तु भारत की शिक्षा, सभ्यता, गौरव, बल और महत्त्व का मूल यह आध्यात्मिक शक्ति(**Spirituality Force**) ही है। जब-जब लोगों को यह विश्वास होने लगा कि भारत के विनाश का काल निकट आ गया है, तब तब आध्यात्मिक शक्ति ने गुप्त मूल स्रोत से तीव्र गति के साथ प्रवाहित हो मुमूर्षु भारत को पुनरुज्जीवित किया है और सभी उपयोगी शक्तियों की सृष्टि भी की है। अभी भी वह मूल स्रोत सूख नहीं गया है, आज भी उस अद्भुत मृत्युंजय शक्ति की क्रीड़ा हो रही है।

किंतु स्थूल जगत् की सभी शक्तियों का विकास समय सापेक्ष होता है, अवस्था के उपयुक्त क्रमानुसार, समुद्र के ज्वार-भाटे की तरह घटता-बढ़ता, अंत में पूर्णरूपेण सफल होता है। हमारे अंदर भी वही हो रहा है। अभी पूर्ण भाटे का समय है, हम ज्वार के मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रहे हैं। महापुरुषों की तपस्या, स्वार्थ त्यागियों का कष्ट-स्वीकार, साहसियों का आत्मविसर्जन, योगियों की योगशक्ति, ज्ञानियों का ज्ञानसंचार, साधुओं की शुद्धता ही है आध्यात्मिक शक्ति का मूल स्त्रोत।

एक बार नाना प्रकार के इन पुण्यों ने भारत को संजीवनी सुधा में डूबा मृत जाति को जीवित, बलिष्ठ और तेजस्वी बनाया था, फिर से वही तपोबल अपने अंदर निरुद्ध होने के कारण अदम्य, अजेय बन बाहर निकलने के लिये उद्यत हुआ है। इन कुछ वर्षों के निपीड़न, दुर्बलता और पराजय के फलस्वरूप, भारतवासी अपने अंदर शक्ति का मूल स्रोत निकालना सीख रहे हैं।

वक्तृता की उत्तेजना से नहीं, म्लेच्छदत्त विद्या से नहीं, सभा-समिति की भावसंचारिणी शक्ति से नहीं, समाचारपत्रों की क्षणस्थायी प्रेरणा से नहीं अपितु अपने अंदर आत्मा की विशाल नीरवता में भगवान् और जीवन के मिलन से जो गंभीर, अविचलित, अभ्रांत, शुद्ध, सुख-दुःख, विजयी, पाप पुण्यवर्जित शक्ति संभूत होती है, वही महासृष्टिकारिणी, महाप्रलयंकारी, महास्थितिशालिनी, ज्ञानदायिनी महासरस्वती, ऐश्वर्यदायिनी महालक्ष्मी, शक्तिदायिनी महाकाली, वही सहस्त्रतेजसंयोजन द्वारा एकीभूत चण्डी प्रकट हो, भारत के कल्याण और जगत् के कल्याण के लिये प्रयास करेगी। **भारत की स्वाधीनता है गौण उद्देश्य-मात्र, मुख्य उद्देश्य है भारत की सभ्यता की शक्ति को दिखाना और जगत्-भर में उस सभ्यता को फैला उसका आधिपत्य स्थापित करना।**

अगर हम पाश्चात्य सभ्यता के बल पर, सभा-समिति के बल पर, वक्तृता के जोर से, बाहुबल के स्वाधीनता या स्वायत्त शासन प्राप्त कर सकते तो उससे वह मुख्य उद्देश्य साधित नहीं होता। भारतीय सभ्यता के बल पर, आध्यात्मिक शक्ति द्वारा सृष्ट सूक्ष्म और स्थूल उपायों से स्वाधीनता प्राप्त करनी होगी।

इसीलिये भगवान् ने हमारे पाश्चात्य-भावापन्न आंदोलन को नष्ट कर, बहिर्मुखी शक्ति को अंतर्मुखी कर दिया है। ब्रह्मबांधव उपाध्याय ने दिव्य दृष्टि से जो कुछ देखा था, उसे देखकर बार-बार वह कहते थे, शक्ति को अंतर्मुखी करो, परंतु समय के फेर से उस समय कोई उसे कर न सका, स्वयं भी न कर सके , किंतु उसे ही आज भगवान् ने स्वयं कर दिया हैं भारत की शक्ति अंतर्मुखी हो गयी है। जब फिर बहिर्मुखी होगी तब फिर वह स्रोत नहीं मुड़ेगा, कोई उसे रोक नहीं सकेगा।

वह त्रिलोकपावनी गंगा भारत को परिप्लावित कर, पृथ्वी को परिप्लावित कर ले आयेगी अपने अमृतस्पर्श से जगत् में नूतन यौवन।

-सम्पादक

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

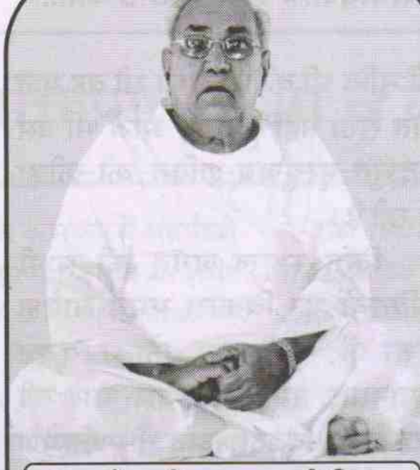

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए) । नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker ***'Mantra'*** *chanting and* ***'Meditation'***.

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें-07533006009

(सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।)

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

www.the-comforter.org

राजगढ़ (चुरू) के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सिद्धयोग ध्यान शिविर आयोजित। (15 फरवरी 2019)

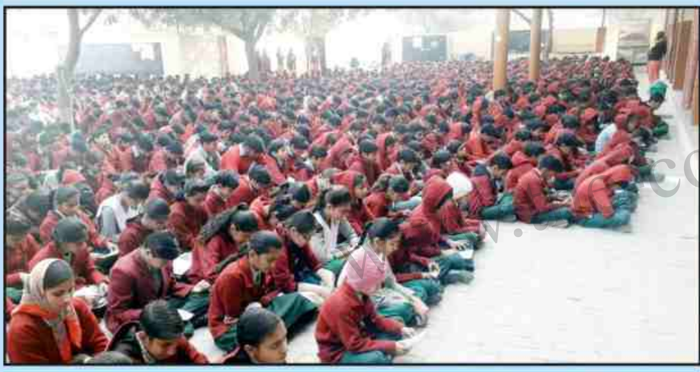

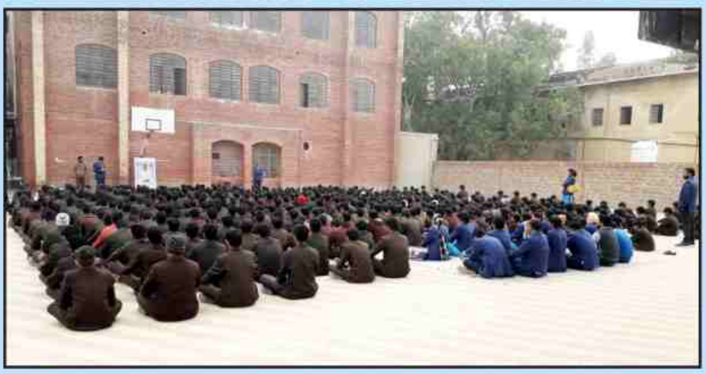

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

अन्तर्मुखी आराधना द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार

सृजन की शक्ति युवा काल ही है। यह सिद्धान्त संसार की हर वस्तु पर लागू होता है। शक्तिहीन वस्तु में सृजन की क्षमता समाप्त प्रायः हो जाती है। ऐसी स्थिति में सभी धर्मों की मृतप्रायः, निरर्थक आराधना पद्धतियों का अन्तिम समय है। प्रकृति निश्चित रूप से इस स्थान की पूर्ति के लिए, निश्चित समय पर नई शक्ति को संसार के जीवों के कल्याण के लिए प्रकट करेगी। इस सम्बन्ध में महर्षि अरविन्द ने स्पष्ट इशारा कर दिया है। उस परमसत्ता तक पहुँच कर उसका साक्षात्कार और प्रत्यक्षानभूति करना सम्भव है, इस सम्बन्ध में जो पथ श्री अरविन्द ने दिखाया है, उसके अलावा कोई रास्ता है ही नहीं।

www.the-comforter.org

बहिर्मुखी आराधना से असंख्य जन्मों में भी उस परम सत्ता तक पहुँचना सम्भव नहीं है। मुझे भी इस प्रकार की अनुभूतियाँ वर्षों से हो रही हैं। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद तो मुझसे जुड़ने वाले लोगों को भी श्री अरविन्द द्वारा वर्णित अनुभूतियाँ हो रही है। श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है:– ''ईश्वर यदि है तो उसके अस्तित्व को अनुभव करने का, उनके साक्षात् दर्शन प्राप्त करने का कोई न कोई पथ होगा, वह पथ चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, उस पथ से जाने का मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है।

हिन्दू धर्म का कहना है कि अपने शरीर के, अपने भीतर ही वह पथ है, उस पर चलने के नियम भी दिखा दिये हैं। उन सब का पालन करना, मैंने प्रारम्भ कर दिया है। एक मास के अन्दर अनुभव कर सका हूँ कि हिन्दू धर्म की बात झूठी नहीं है, जिन जिन चिह्नों की बात कही गई है, मैं उन सब की उपलब्धि कर रहा हूँ।'' इस कार्य को श्री अरविन्द क्यों करना चाहते थे, इस सबन्ध में उन्होंने स्पष्ट करते हुए कहा है:–''मैं अपने निज के लिए कुछ भी नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे अपने लिए न मोक्ष की आवश्यकता है, न अतिमानसिक सिद्धि की। यहाँ मैं इस सिद्धि के लिए जो यत्न कर रहा हूँ, वह केवल इसलिए कि पार्थिव चेतना में इस काम का होना आवश्यक है। और अगर यह पहले मेरे अन्दर न हुआ तो औरों में भी न हो सकेगा।'' उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि जितने भी महान् संत हुए हैं, उन्होंने अपने लिए कुछ भी नहीं किया।

–समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)
सेवा में,
श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी